हनुमान सिद्धि

कलयुग में मनुष्यों के द्वारा जाने-अनजाने कोई न कोई पाप कर्म हो ही जाया करता है, ऐसे ही कुछ पाप पूर्व जन्मों में भी हुए होंगे जिनके कारण इस जीवन में दुःख और शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। इस जीवन को सुखी बनाने और पारलौकिक व आगामी जीवन के कष्टों का निवारण करने के लिए 'यशपाल भारती जी' ने हनुमान सिद्धि की रचना की है।

सृष्टि के निर्माणकर्त्ता ने स्पष्ट घोषणा की है कि हनुमान जी को विधि विधान से नित्य जपने से सभी प्रकार के पापों का नाश होता है।

मङ्गलाचरण

अहं भजामि मनोजवं मारुत तुल्य वेगम् ॥
सर्वार्थ सिद्धि सदनं श्री राम दूतं शिरसा नमामि ॥ १ ॥
वायु पुत्राय वीराय दीर्घ लाङ्गूल धारिणे ॥
यशो देहि जय देहि च देहि रक्षां मर्कट रूपिणे ॥ २ ॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं, सीता शोक विनाशाय ॥
कल्याण कुरु में प्रभु, हे हनुमद रामदूताय ॥ ३ ॥
यशपाल कृतं मङ्गलाचरण हनुमान प्रसन्नता दायकम् ॥
नमो नमः भीम रूपाय, हनुमद सिद्धि प्रदायकम ॥ ४ ॥

—आद्यानन्द यशपाल 'भारती'

हनुमान सिद्धि

हनुमानजी के सिद्ध पाठ विधि-विधान
और सरल हिन्दी अनुवाद सहित

सम्पादक एवं टीकाकार

आद्यानन्द यशपाल 'भारती'

संस्थापक एवं प्रबन्ध-निर्देशक
तंज्योति गुह्य विद्या साधन एवं अनुसंधान केन्द्र
हरिद्वार (उ०प्र०)

मूल्य : 20.00 रुपए

प्रकाशन
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-249401

प्रकाशन :

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड, (आरती होटल के पीछे)

हरिद्वार-249401

फोन : (0133) 426297

वितरक :

रणधीर बुक सेल्स (शो रूम)

रेलवे रोड, समीप मुख्य डाकघर, हरिद्वार

संपादक एवं टीकाकार :

योगीराज यशपाल 'भारती'

द्वितीय संस्करण 1998

HANUMAN SIDDHI

By : Adyanand Yashpal 'Bharti'

Published by : RANDHIR PRAKASHAN

Railway Road, Hardwar-249401

विषयानुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	मङ्गलाचरण	२
२.	भूमिका	७-१०
३.	विविध पाठों के प्रयोग व लाभ	११-१५
४.	रामदूत हनुमान	१६-१९
५.	एकमुखी हनुमान कवचम्	२०-२८
६.	पञ्चमुखी हनुमत्कवचम्	२९-३७
७.	सप्तमुखी हनुमत्कवचम्	३८-४५
८.	एकादशमुखी हनुमत्कवचम्	४६-५२
९.	लांगूलास्त्र शत्रुञ्जय हनुमत्सतोत्र	५३-५८
१०.	हनुमद सहस्त्रनाम	५९-८०
११.	हनुमान चालीसा	८१-८३
१२.	संकट मोचन	८४-८७
१३.	बजरंग बाण	८८-८९
१४.	हनुमान साठिका	९०-९३
१५.	हनुमद बीसा	९४-९५
१६.	हनुमान स्तोत्र	९६-१०१
१७.	हनुमान जी की आरती	१०२
१८.	संक्षिप्त हनुमत पूजनम	१०३-१०४



ज्योतिष एवं तन्त्र सम्राट
श्री आद्यानन्द यशपाल 'भारती' रचित
विविध महत्वपूर्ण ग्रन्थ

१. सृष्टि का रहस्य दस महाविद्या
२. शिव शक्ति
३. अंक ज्योतिष
४. संकट मोचिनी कालिका सिद्धि
५. संजीवनी विद्या महामृत्युञ्जय प्रयोग
६. दुर्गा उपासना पद्धति
७. त्रयोदश कवच संग्रह (अनुवाद सहित)
८. सिद्ध विद्या स्वरोदय विज्ञान
९. तन्त्र प्रयोग
१०. सिद्ध शाबर मन्त्र
११. यन्त्र माला
१२. मन्त्र रामायण
१३. स्वप्न सिद्धान्त
१४. यन्त्र विधान (ग्रन्थ)

मूल्य व अन्य जानकारी के लिए लिखें—

प्रकाशक
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

भूमिका

आज पूजा उपासना का अर्थ केवल कामना पूर्ति ही रह गया है जो कि एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। शास्त्रों में बारम्बार स्पष्ट किया गया है कि निस्वार्थ पूजा ही फलदायी होती है। गीता के द्वारा श्री कृष्ण ने सन्देश दिया है कि पूजा व्यर्थ नहीं जाया करती है परन्तु कामना का फल देकर पूजा लुप्त व उसकी शक्ति लुप्त हो जाया करती है। इस पर भी संतप्त हृदय और एक छू मन्तर की खोज प्रत्येक व्यक्ति को पूजा के प्रति आकर्षित करती रहती है।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना पाप हुआ करता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के आकर्षण का आधार भिन्न-भिन्न हुआ करता है। प्रायः मुझे लोग कहते हैं कि हम दूसरों का कल्याण करना चाहते हैं। यह सुनकर मैं बड़ा असमंजस में पडता हूँ कि जो व्यक्ति यह कह रहा है उसे ही सबसे अधिक कल्याण की आवश्यकता हुआ करती है। विडम्बना की बात है कि साधक प्रचलित मान्यताओं के आधार पर अपने कल्पना लोक का निर्माण करता है पर सब कल्पना के उपाय से साक्षात् होता है, सम्भवतः उसे मेरी निम्नलिखित पंक्तियाँ समझ में आ जायें कि—

किस्मत का खेल लकीरें हैं।
जीवन तो बस तदबीरें हैं॥
यशपाल ने तो यह जाना है।
हम चलती हुई तस्वीरें हैं॥

पराविज्ञान में व्यक्त किये गये षडकर्म आज अनोखे मोड़ पर खड़े हैं। लोगों ने जिस प्रकार ज्योतिष को उपहास का विषय बना दिया है उसी प्रकार अब पराविज्ञान एक घिनौनी साजिश का शिकार हो रहा है। केवल कुछ ऐसे लोगों के कारण जो कुछ भी नहीं है, परन्तु कुछ होने की चादर ओढ़े हुए हैं।

आदि से ही शिकार होता था।
मरता था वही जो पास होता था ॥

गलत है पर जो गलत है स्वीकार नहीं करता कि वह गलत है। गलत जब सत्ताधिकारी बन जाता है तब गलत कितना भी गलत क्यों न हो ठीक ही कहलाता है।

पैजामा तंग हो तो नेता कहलाता है।
फट जाये वह तो अभिनेता कहलाता है ॥
कोयले ने घिसकर यह प्रमाणिक किया।
सच कैसा भी हो वह छुप ही जाता है ॥

रामायण, महाभारतादि धार्मिक ग्रन्थों का अनुशीलन करने पर सबसे पहले जो चरित्र स्पष्ट होता है वह नारद का होता है। प्रत्येक युग में नारद प्रत्येक स्थल पर नहीं आता पर नारद का व्यवहार एवं स्वभाव लेकर अनेकों प्राणी आज जीवन यापन कर रहे हैं। वे जिसकी थाली से खाते हैं उसे ही शूली पर चढ़वा देते हैं। महाभारत से यदि मामा शकुनि को हटा दिया जाये तो महाभीषण संग्राम की कल्पना कितनी रह जाती है यह सोचना आज आवश्यक हो उठा क्योंकि जब ऐसा हो रहा था तब भी हमारे धर्म-कर्म का पराविज्ञान था और आज भी है परन्तु किसी भी मन्त्र के द्वारा वह भीषण संग्राम रोका नहीं जा सका था। सच में एक शायर ने ठीक ही कहा था—

तूँ लाख पढ़ता रहे प्यार के मन्तर ऐ साजिद।
जिनकी फितरत में हो डसना वह डस ही जाते हैं ॥

जिस तरफ द्वेषाग्नि जल रही होती है उस तरफ भविष्य भी जल रहा होता है जबकि समझदार लोग पाण्डवों की तरह सह जाते हैं। प्रभु भक्ति करते हुए, उसकी इच्छा को स्वीकार करते हुए महाभीषण संग्राम से जीवित

निकल जाते हैं जबकि विद्वेषी कोई भी शेष नहीं रह पाता है। इसीलिये कहता हूँ कि प्रभु की इच्छा स्वीकार करनी चाहिये और भक्ति निष्काम करनी चाहिए। वैदिक वर्णाश्रमानुसार सनातन धर्म के तैंतीस करोड़ देवता हैं। यह जो स्वीकार किया गया है उसमें छोटे-बड़े सभी देवता आ जाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अतिरिक्त जो अनेकों अवतार हैं, वस्तुत: वह भी देवता ही हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि बड़े देवताओं की उपासना से फल मिलता ही है। आजकल भैरव, यक्ष, गन्धर्व, मातृका, चामुण्डा, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, अष्ट वसु गण, विश्वेदेव गण, नवग्रह, नक्षत्र स्वामी, लोकपाल, क्षेत्रपालादि की भी उपासना से शीघ्र लाभ प्राप्त किये जा रहे हैं।

आजकल कलयुग का बोलबाला है। कल कहते हैं मशीनरी को अत: समझा जा सकता है आजकल मशीनरी का युग चल रहा है। स्थिति यह आ गई है कि मनुष्य के दिमाग का कार्य भी मशीनरी करने वाली है। इसे मैकेनिकल टाईम भी कहा जा सकता है। ऐसे में प्राणी भी मैकेनिकल हो गये हैं और उनकी सूझबूझ भी यान्त्रिक हो गई है। जबकि शिक्षा का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक हो चुका है। ऐसे में पाखण्ड भी अत्यधिक बढ़ गया है।

प्राय: मनों में अशान्ति कामादि विचार भरे पड़े हैं। ऐसे में संकल्प त्याग की आवश्यकता है और विश्वास परमावश्यक है कि उसके द्वारा की जा रही पूजा निश्चित फलदायी होगी। सचमुच मिट्टी में पड़ा हुआ बीज अकस्मात अंकुरित हो उठता है।

हनुमान जी के सिद्ध पाठ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं और आज के युग में इसी उपासना की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि क्लेश व द्वेष इतना अत्यधिक बढ़ गया है कि गन्दे कृत्य अधिक किये जा रहे हैं। ऐसे में ऐसा ईष्ट या संरक्षक चाहिये जो कि समस्त कृत्यों को डकार जाये और यह शक्ति हनुमान जी के पास कितनी है यह अग्रलिखित पंक्ति से ज्ञात होता है—

सप्तकोटि महामन्त्र मन्त्रितावयवः प्रभुः ॥

सात करोड़ महामन्त्रों से शक्तिकृत हुई देह वाले हनुमान हैं। यह ब्रह्माण्ड पुराण कहता है। जिन्हें भगवान राम से प्रेम हो वह भी इनकी उपासना से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। भूत प्रेतादि तो इनके नाम से ही भागते हैं। शत्रुओं को तत्काल प्रभु नुकसान पहुँचाते हैं।

इस समय बस करता हूँ क्योंकि बातें बहुत हैं जो कि करनी है पर पुस्तक का कलेवर बढ़ जाने का भय है अतः आज्ञा दें—नमस्कार !

सौर चैत्र मासे, विक्रमी सम्वत् २०४६ आपका

आद्यानन्द यशपाल 'भारती'

सम्पर्क :
पोस्ट बाक्स नं. १६
हरिद्वार-२४९४०१



वायु-पुत्र, मारुति-नन्दन, अञ्जनी-पुत्र
श्री हनुमान जी के
विविध पाठों के प्रयोग व लाभ

✹ एकमुखी हनुमत्कवचम् ✹

यह कवच भोजपत्र के ऊपर, ताड़पत्र पर या लाल रंग के रेशमी वस्त्र पर त्रिगन्ध की स्याही से लिखकर कण्ठ या भुजा पर धारण करना चाहिये। इसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर धारण करना लाभकारी रहता है। त्रिलोह के विषय पर विशेष जानकारी मेरी पुस्तक दत्तात्रेय तन्त्र से प्राप्त की जा सकती है।

यह कवच प्रभु श्री रामचन्द्र के द्वारा 'ब्रह्माण्ड पुराण' में व्यक्त हुआ है। उनका वचन है कि यह कवच धारक की समस्त कामनायें पूर्ण करता है।

रविवार वाले दिन पीपल वृक्ष के नीचे बैठ कर इसका पाठ करने से धन की वृद्धि व शत्रुओं की हानि हुआ करती है।

इस कवच को लिख कर फ्रेम करवा कर पूजन स्थल पर रखने से इसकी पंचोपचार से पूजा करने पर शत्रु ह्रास को प्राप्त होते हैं। साधक का मनोबल बढ़ता है। रात्रि के समय दस बार इसका पाठ करने से मान-सम्मान व उन्नति प्राप्त होती है।

अर्द्धरात्रि के समय जल में खड़े होकर सात बार पाठ करने से क्षय, अपस्मारादि का शमन होता है।

इस पाठ को तीनों संध्याओं के समय प्रतिदिन जपते हुए तीन मास व्यतीत करता है उसकी इच्छामात्र से शत्रुओं का हनन होता है। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसके साधक के पास भूत-प्रेत नहीं आ पाते हैं।

✷ पञ्चमुखी हनुमत्कवचम् ✷

यह अत्यधिक तीव्र व शीघ्र प्रभावी कवच है जो दुर्लभ ग्रन्थ 'सुदर्शन संहिता' से लिया गया है। यह संहिता ग्रन्थ हनुमान जी साधकों के लिये एक कल्पवृक्ष के समान है। जिस प्रकार महामाया आद्य भवानी कालिका जी का पूर्ण संहिता ग्रन्थ 'महाकाल संहिता' है उसी प्रकार से यह ग्रन्थ भी हनुमत् उपासना का पूर्ण संहिता ग्रन्थ है पर दुर्भाग्य कि दोनों महाग्रन्थ आज दुर्लभ हो चुके हैं।

इस कवच का एक पाठ करने से शत्रुओं का नाश होता है। दो पाठ करने से कुटुम्ब की वृद्धि होती है। तीन पाठ करने से धन लाभ होता है। चार पाठ करने से रोगों का शमन होता है। पाँच पाठ करने से वशीकरण होता है। छह पाठ करने से महामोहन होता है। सात पाठ करने से सौभाग्य उदय होता है। आठ पाठ करने से अभिलाषा पूर्ण होती है। नव पाठ करने से राज्य सुखोपभोग होता है। दस पाठ करने से ज्ञान दृष्टि बढ़ती है। ग्यारह पाठ करने से क्या है जो नहीं होता है।

✷ सप्तमुखी हनुमत्कवचम् ✷

यह पाठ अथर्वण रहस्योक्त है जिसका तीनों समय पाठ करने से परिवार में सुख व समृद्धि होती है। असाध्य रोग नष्ट होते हैं। मान-सम्मान व कीर्ति लाभ होता है व शत्रुओं का हनन होता है। यह पाठ अत्यन्त गुप्त है अत: इसका प्रयोग भी गोपनीयता के साथ करना चाहिये। यूँ भी परम्परा है कि गुप्त साधन गोपनीय रखे जाने चाहिये। मान्यता है कि भोजन, मैथुन व साधन एकान्त में ही करना चाहिये।

✷ एकादशमुखी हनुमत्कवचम् ✷

महात्मा अगस्त जी अर्द्धांगिनी श्रीमती लोपामुद्रा ने उनसे एक

अभिलाषा कही थी जिसके उत्तर में उन्होंने सृष्टि विधायक श्री ब्रह्मा जी के द्वारा कथित यह कवच बताया था। उनके अनुसार वाद-विवाद, भयानक कष्ट, ग्रह भय, जल, सर्प, दुर्भिक्ष, भयंकर राज्य शस्त्र भय से भय नहीं रहता है और तीनों संध्याओं में इसका पाठ करने से निःसन्देह अभीष्ट लाभ होता है। इस कवच को विभिषण ने छन्दोबद्ध किया था व श्री गरुड़ जी ने लेखन करवाया था। मान्यता है कि *'ये पठियन्ति भक्तया च सिद्धयस्तत्करे स्थिताः'* अर्थात् जो इसका पाठ करेगा उसके हाथ में सिद्धियाँ निवास करेंगी। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि सिद्धियाँ प्राप्त करने वाले साधक को यह पाठ अवश्य करना चाहिये।

✷ लांगूलास्त्र शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्रम् ✷

यह स्त्रोत शत्रु नाशक है। जब अनेक शत्रु जीवन को दुःख पहुँचाने लग जायें या कोई शक्तिशाली व्यक्ति शत्रु बन जाये तब दास्य तथा विनीति भाव से *'ममारातीन निपातय'* का पाठ करना चाहिये। इसके साथ ही माला मन्त्र अर्थात् मन्त्रात्मक एक पाठ है जिसे सावधानी से करना होता है। यह पूरा का पूरा पाठ अति विलक्षण है। इसके प्रभाव से शत्रु को कष्ट होने लग जाता है और प्रत्यक्ष से छुपे शत्रु पीड़ित होते हैं। परन्तु स्मरण यह रखना होता है कि पाठ के मध्य में *अरे मल्ल चटख* या *तोड़रमल्ल चटख* का उच्चारण करके कपि मुद्रा का प्रदर्शन करना होता है। इसके प्रभाव अत्यन्त गम्भीर होते हैं।

✷ हनुमत्सहस्त्रनाम स्त्रोत्रम् ✷

यह पाठ 'ब्रह्माण्ड पुराण' के उत्तर खण्ड में श्री भगवान रामचन्द्र जी के द्वारा कहा गया है। इसी पाठ में भक्ति मुक्ति प्रदायक, महाकष्ट, महाशोक, महारोग, महाअरिष्ट विनाशक एक मन्त्र भी व्यक्त हुआ है। पाठ में इसकी एक माला जपना श्रेयस्कारी रहता है।

अनेक ऋषियों के द्वारा पूछे जाने पर महर्षि बाल्मीकि जी ने यह आधि व्याधि एवं समस्त कष्टों का नाशक सहस्रनाम स्त्रोत कहा था। इसका डेढ़ मास तक पाठ करने से लोग कहा मानने लगते हैं अर्थात् वशीकरण होता है। पीपल के नीचे इसका पाठ करने से शत्रुओं को कष्ट होता है। स्वीकार किया गया है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन इस पाठ को करता है उसके कष्टों का अन्त हो जाता है।

ब्रह्म मुहूर्त में प्रतिदिवस इसका पाठ करने से इहलोक व परलोक के सुख प्राप्त होते हैं। स्तोत्र का ऋषि का कथन है कि इसके लाभों के प्रति *नाऽत्र संशयः* अर्थात् सन्देह नहीं करना चाहिये।

✹ हनुमान चालीसा ✹

यह हनुमान चालीस भक्त शिरोमणि श्री गोस्वामी तुलसीदास जी के द्वारा रचित है जिसका पाठ प्रायः लोग प्रतिदिन करते ही रहते हैं। इसका ५१ बार या १०१ बार जप करना शत्रु व भूत-प्रेत निवारक है। इसे प्रतिदिन चालीस बार पढ़ना चाहिये व नित्य पढ़ते हुए चालीस रोज पूर्ण करने चाहिये। इस प्रकार से यह पाठ सिद्ध होता है। पीपल के नीचे बैठ कर जपने से शनि प्रकोप शान्त होता है। शमी वृक्ष के नीचे पाठ करने से भी शनि अनिष्ट शान्त होता है।

✹ संकट मोचन ✹

यह पाठ हनुमान चालीसा की भाँति ही सरल भाषा में है और इसका अनुष्ठान संकटों का शमन करता है। इसे प्रति संध्या में २१ बार पढ़ते हैं और २१ दिन तक करते हैं। ४० रोज करना विशेष लाभकारी रहता है।

✹ बजरंग बाण ✹

हमारी गुप्त विद्याओं में मूठ व बाण आदि चलाये जाते हैं।

कभी-कभी डिब्बी भी मारी जाती है। इसी प्रकार से प्रस्तुत पाठ के विचित्र प्रयोग किये जाते हैं। हनुमान जी के साधकों के पास यह पाठ एक शस्त्र के रूप से रहता है। इसे प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपते हैं। यह क्रिया निरन्तर चालीस दिन तक की जाती है। इसके बाद इसे लिख कर ताबीज की तरह धारण कर लेते हैं। यह पाठ के प्रसाद से भूत-प्रेत व शत्रुओं का बुरा हाल हुआ करता है।

✹ हनुमान साठिका ✹

यह पाठ सरल भाषा में तुलसीदास जी के द्वारा व्यक्त हुआ है। यह पाठ भव बन्धन का भंजन करता है, साधक का कल्याण करता है। इसे प्रतिदिन पढ़ना चाहिये। इसका साठ बार प्रतिदिन पाठ करने से साठ दिनों में इसकी सिद्धि होती है।

✹ हनुमद् बीसा ✹

यह पाठ हनुमान जी की कृपा का प्रसाद है जो कि आद्यानन्द यशपाल 'भारती' के द्वारा रचित व उपलब्ध हुआ है। यह पाठ शत्रु को तत्काल अशुभता प्रदान करता है। इसे प्रतिदिन १०८ बार इक्कीस दिन तक जपने से विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। इस पाठ के अन्य प्रयोग व ज्ञान मेरी पुस्तक 'तन्त्र प्रयोग' से प्राप्त किये जा सकते हैं।

✹ हनुमान स्तोत्र ✹

यह स्तोत्र पाठ विभीषण जी ने कहा था और श्री गरुड़ जी ने इसका अनुष्ठान्न करके प्रमाणित किया था। यह स्तोत्र 'सुदर्शन संहिता' में दिया हुआ है। इसके प्रभाव से श्री हनुमान जी साधक का कल्याण करते हैं व उसकी मनोकामना पूर्ण करते हैं।



रामदूत हनुमान

वायुपुत्र श्री हनुमान जी के जीवन प्रसङ्ग में श्री रामचन्द्र जी का महत्वपूर्ण ईष्ट वाला स्थान है और वह स्वयं रामदूत कहलाकर प्रसन्न मना रहते हैं। हनुमान जी साक्षात् रुद्रावतार हैं जबकि भगवान श्री राम विष्णु अवतार है।

भगवान विष्णु ने जब अयोध्यापति श्री दशरथ जी के यहाँ जन्म लिया तब उनका नाम 'श्री रामचन्द्र' रखा गया जिन्होंने सृष्टि में विभिन्न लीला कर्म प्रस्तुत करके 'मर्यादा पुरुषोत्तम' की विशेषता को प्रमाणित किया था।

आध्यात्म पथ के पथिकों ने 'राम' शब्द की व्याख्या करते हुए स्पष्ट कहा है कि जो राजा के स्वरूप से शोभायमान है और जो पृथ्वी पर स्थिर होकर साधु-सन्त जनों की समस्त कामनाएं पूर्ण करते हैं वे 'श्री राम' हैं जो कि विष्णु के अवतार हैं। इनके द्वारा राक्षसों का अन्त होता है। कुछ विशारदों ने 'अभिराम' होने के कारण 'राम' स्वीकार किया है और कुछ की समझ से जो अपनी लीलाओं के कारण जगत में प्रसिद्ध हुए वह 'श्री राम' हैं। जिस प्रकार राहु चन्द्र को ग्रस लेता है उसी प्रकार श्री राम राक्षसों का आभाहीन, प्रभाहीन कर देते हैं।

श्री राम को साक्षात् परमेश्वर स्वीकार किया गया है जबकि परमात्मा रूप, बाह्य देह रहित, अवयव रहित, अद्वितीय और प्रकृत है परन्तु गीता के द्वारा श्री कृष्ण प्रबल उद्घोष करते हैं कि जब-जब धर्म को हानि, क्लेश पहुँचने लगता है तब-तब मैं अवतार लेता हूँ और यह रहस्य अनेक जीवन चरित्रों में प्रमाणित होता है कि भगवान भक्त और भक्ति के रक्षार्थ शरीर रूपी आकार ग्रहण करते हैं।

श्री भगवान के साकार विभिन्न अवतारों में दो भुजा, चार भुजा, छः भुजा, आठ भुजा, बारह भुजा, सोलह भुजा, अट्ठारह भुजा तक के वर्णन हैं।

आगे चल कर एक सौ आठ से हजार भुजा तक के आकार प्रकट हुए हैं। इन भुजाओं के हाथों में विभिन्न अस्त्र-शस्त्र या विशेषता समायी रहती है। इन सभी रूपों के अलग-अलग रंग, अलग-अलग वाहन हैं।

आकार होने के कारण दिखने वाले परम प्रभु परमेश्वर स्वयंम्भू कहलाते हैं।

स्वयंभूर्ज्योतिर्मियोऽन्त रूपं स्वेव भासते ॥

क्योंकि उनके प्रकट या साक्षात् होने में कोई कारण रूप नहीं होता है। वह तो स्वयं प्रकट होते हैं।

परमात्मा तो ज्योति स्वरूप हैं।

सृष्टि में पाये जाने वाले सभी धर्म अपने स्वामी की विभिन्न कल्पना करते हैं परन्तु उनके अपने अलग नियमानुसार बनाये गये धार्मिक स्थल पर ज्योति अवश्य प्रज्वलित रहती है।

अवतार भेद से साकार स्वरूपी होने पर भी परमेश्वर अनन्त है और एक वही इस अनन्त विराट के स्वामी हैं। वह अपनी चैतन्य शक्ति प्राण रूप से समस्त प्राणियों की देहों में सर्वदा स्थित रहते हैं। इसी कारण वेदान्त में 'अहं ब्रह्मास्मि', 'शिवोहम' व 'हरि ॐ तत्सत्त' स्वीकार किये गये हैं।

यह प्रभु सत्व, रज, तम गुणों के समावेश से विश्व का निर्माण, जीवन व संहार करते रहते हैं।

'राम' के द्वारा आत्मा का प्रतिपादन होता है और 'नमः' जीव वाचक है जबकि ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि की उत्पत्ति, पालन व संहार करने वाली शक्तियाँ नाद बिन्दु एवं बीज से उत्पन्न रोद्री, ज्येष्ठा और वामा रकार पर आश्रित हैं। यह दकार सीता स्वरूप से प्रकृति और राम रूप से पुरुष होने के कारण सर्वदा वन्दनीय व पूजनीय है। प्रकृति पृथ्वी रूपा होती है जबकि आकाश पुरुष रूपा है जिस प्रकार से विशाल अश्वत्थ का वृक्ष अपने बीज में

समाया रहता है उसी प्रकार से यह विशाल सृष्टि रकार में समायी हुई है।

सम्पूर्ण विश्व प्रपंच के स्वामी भगवान विष्णु हैं। उनकी योगमाया का रूप ईकार है।

विष्णुः प्रपञ्च बीजं च माया ईकार उच्यते॥

यह ईकार वाली अव्यक्त महामाया अपने अमृतमय अवयवों और दिव्याभूषणों से विभूषित स्वरप से साक्षात् होती हैं। वह त्र्य रूपा अपने प्रथम रूप में शब्द ब्रह्म से युक्त हैं।

ईकार रूपिणी सोभाऽमृतवायव देव्यलङ्कारस्त्रङ मौक्तिकाद्यामरणालंकृता महामायाऽव्यक्त रूपिणी व्यक्ता भवति॥

वह प्रसन्न होकर मस्तिष्क के द्वारा बोध प्रदान करती हैं एवं अपने द्वितीय स्वरूप से जब वह इस भूतल पर प्रकट होती हैं तब राजा जनक के हल के अग्रभाग से पृथ्वी के द्वारा साक्षात् होती हैं जबकि तृतीय रूप अव्यक्त है, जो कि ईकार है।

इन सीता जी को हनुमान जी मातृ शक्ति के स्वरूप से स्वीकार करते हैं। यह अतुलित बल के स्वामी वायुदेव की कृपा से चैत्र शुक्ल पूर्णमासी के शुभावसर पर जन्मे थे या अवतरित हुए थे। वानरों के राजा श्री केसरी इनके पिता थे। इसी कारण इन्हें केसरी नन्दन कहा जाता है। इनकी माता श्री का नाम अंजनी था। इसी कारण इन्हें आंजनेय भी कहा जाता है। इनके सृष्टि में जन्म के समय अनेकों देवी-देवता आये थे और इन्हें अनेक प्रकार के वरदान प्रदान कर गये थे।

श्री रामचन्द्र जी के अनन्य भक्त के रूप से इनका नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप समस्त अभीष्ट कामनाओं को पूर्ण करने वाले परम

शक्तिशाली देवता हैं।

हनुमान देवता प्रोक्तः सर्वाभीष्ट फल प्रदः ॥

इनके मन्त्र भोग मोक्ष प्रदान करते हैं व महारिष्ट, महापाप, महादुःखादि का निवारण करते हैं।

मन्त्रं हनुमतो विद्धि मुक्ति मुक्ति प्रदायकम् ।
महारिष्ट महापाप महादुः ख निवारणम् ॥

हनुमान जी की शक्ति उपमा रहित है क्योंकि यह अनुपम है। जो रावण कैलाश को उठा लेता है उसे ही एक मुक्का मार कर आप मूर्च्छित कर देते हैं। लक्ष्मण शक्ति होने पर संजीवनी लेने जाते हैं तो संजीवनी वाले द्रोणगिरी को ही उठा लाते हैं। महाभारत के भीषण संग्राम में अर्जुन के रथ पर विराजमान होकर पाण्डुओं का उद्धार करते हैं। लंका को जला देना, महासिन्धु को फलांग जाना यह ऐसी लीलाएं हैं जो कि यथार्थ में उन्हें अतुलित बल धाम वाले, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुण रत्नाकर प्रमाणित करते हैं। आपके विशेष द्वादश नाम जपने मात्र से सर्व भय समाप्त होते हैं।

हनुमानञ्जीनीसुनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः ।
लक्ष्मणप्राणदाताश्च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥



◆ प्रथम पाठ ◆

एकमुखी हनुमान कवचम्

॥ रामदास उवाच ॥

एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम्,
प्रपच्छ गिरिजा कान्तं कर्पूरधवलं शिवं ।१।

रामदास ने कहा—एक बार कर्पूर के समान अत्यन्त शुभ्र वर्णमयी लोक कल्याणी सुखासन में बैठे शिवजी से पार्वती जी ने पूछा—

॥ पार्वत्युवाचः ॥

भगवन् देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो,
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्धव ।२।
संग्रामे संकटे घोरे भूत प्रेतादि के भये,
दुः ख दावाग्नि संतप्तचेतसाँ दुः खभागिनाम् ।३।

पार्वती जी ने पूछा—हे भगवन ! हे देव देवेश ! हे जगत के प्रभु ! युद्ध के संकट वाले समय, भूत-प्रेत पीड़ित हो जाने पर दुःख के भरमार हो जाने पर और शोकादि के बढ़ जाने पर सन्तप्त हृदयों की रक्षा किस प्रकार से होगी।

॥ महादेव उवाचः ॥

श्रणु देवि प्रवलक्ष्यामि लोकानाँ हितकाम्यया,
विभीषणाय रामेण प्रेम्णाँ दत्तं च यत्पुरा ।४।

महादेव ने बताया—सुनो देवी ! लोक के कल्याणार्थ भगवान राम ने विभीषण को जो—

कवच कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः,

गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छणु सुन्दरी ।५ ।

वायु पुत्र कपिनाथ अर्थात् हनुमान का कवच बताया था वो अत्यन्त गोपनीय है। इस विशेष कवच को हे सुन्दरी श्रवण करो।

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्री हनुमान कवच स्तोत्र मन्त्रस्य श्री रामचंद्र ऋषिः श्री वीरो हनुमान् परमात्माँ देवता, अनुष्टुप छन्दः, मारुतात्मज इति बीजम्, अंजनीसुनुरीति शक्तिः, लक्ष्मण प्राणदाता इति जीवः, श्रीराम भक्ति रिति कवचम्, लंकाप्रदाहक इति कीलकम् मम सकल कार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।६ ।

॥ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं श्रीं ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ।७ ।

इस मन्त्र को यथाशक्ति जपें।

॥ करन्यासः ॥

ॐ ह्राँ अंगुष्ठाभ्याँ नमः ।८ ।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्याँ नमः ।९ ।

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्याँ नमः ।१० ।

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्याँ नमः ।११ ।

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्याँ नमः ।१२ ।

ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्याँ नमः ।१३ ।

॥हृदयादिन्यास ॥

ॐ अंजनी सूतवे नमः, हृदयाय नमः ।१४ ।

ॐ रुद्रमूर्तये नमः, शिरसे स्वाहा । १५ ।

ॐ वातात्मजाय नमः, शिखायं वषट । १६ ।

ॐ रामभक्तिरताय नमः, कवचाय हुम् । १७ ।

ॐ वज्र कवचाय नमः, नेत्रत्र्याय वौषट् । १८ ।

ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय नमः, अस्त्राय फट् । १९ ।

॥ ध्यान ॥

ॐ ध्यायेद बालदिवाकर द्युतिनिभं देवारिदर्पांपहं,
देवेन्द्र प्रमुख प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा । २० ।
सुग्रीवादि समस्त वानरयुतं सुव्यक्ततत्वप्रियं,
संरक्तारूण लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकतम् । २१ ।

उदयकाल के सूर्य के समान कांति वाले, असुरों के गर्व का नाश करने वाले देवतादि प्रमुख उत्तम कीर्तिमयी, पूर्ण तेजस्वी, सुग्रीवादि वानर सहित, ब्रह्मतत्व को प्रत्यक्ष करने वाले, रक्त व अरुण नेत्रमयी, पीताम्बर से अलंकृत हनुमान जी का ध्यान करना चाहिये।

उद्यन्मार्तण्ड कोटि प्रकट रुचि युतं चारुबीरासनस्थं, मौंजी यज्ञोपवीताऽऽभरण रुचि शिखा शोभितं कुण्डलाढयम् । २२ ।

भक्तानामिष्टदम्नप्रणतमुनजनं वेदनादप्रमोदं, ध्यायेद्देवं विधेय प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्धिम् । २३ ।

उदयकाल के करोड़ों सूर्य समान कांतिमयी, वीरासन में शोभित अत्यन्त रुचि से मौंजी तथा यज्ञोपवीत को धारण करने वाले, कुण्डलों से सुशोभित, भक्तों की वाँछा पूर्ण करने में चतुर, वेदों के शब्द से अपार हर्षित

होने वाले, वानरों के प्रमुख एवं अत्यधिक विस्तृत समुद्र को अचानक लांघ जाने वाले हनुमान जी का ध्यान करना चाहिए।

वज्राँङ्ग पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल मण्डितम्,
उद्यदक्षिण दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तये । २४ ।
स्फटिकाभं स्वर्णकान्ति द्विभुजं च कृताञ्जलिम्,
कुण्डलद्वय संशोभि मुखाम्भोजं हरिं भजे । २५ ।

जिनका शरीर वज्र के समान कठोर है। केश पीले हैं। जिन्होंने स्वर्ण कुण्डल धारण किये हुए हैं। जिनका दाहिना हाथ ऊपर को उठा हुआ है। स्फटिक के समान कांतिमयी, स्वर्ण की भाँति देदीप्यमान, दो भुजामयी, जिन्होंने हाथों की अंजलि बना रखी है। ऐसे हनुमान जी का ध्यान करता हूँ।

॥ हनुमान मन्त्र ॥

निम्नलिखित मन्त्र सावधानी से जपें—

ऊँ नमो भगवते हनुमदाख्य रुद्राय सर्व दुष्ट जन मुख स्तम्भनं कुरु कुरु ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ठं ठं ठं फट् स्वाहा, ऊँ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोऽलंकृताय अंजनी गर्भ सम्भूताय रामलक्ष्मणनंदकाय कपि सैन्य प्राकाशय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाह्य करणाय परोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचर्याय गम्भीर शब्दोदयाय ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ सर्व दुष्ट ग्रह निवारणाय स्वाहा।

ऊँ नमो हनुमते सर्व ग्राहन्भूत भविष्यद्वर्तमान दूरस्थ समीप स्थान् छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि सर्व काल दुष्ट बुद्धिमुच्चाटयोच्चाटय परबलान क्षोभय क्षोभय मम सर्व

कार्याणि साधय साधय ऊँ ह्राँ ह्रीं हूँ फट् देहि ऊँ शिव सिद्धि ऊँ ह्राँ ह्रीं हूँ स्वाहा।

ऊँ नमो हनुमते पर कृत यन्त्र मन्त्र पराहङ्कार भूत प्रेत पिशाच पर दृष्टि सर्व तर्जन चेटक विद्या सर्व ग्रह भयं निवारय निवारय, वध वध, पच पच, दल दल, विलय विलय सर्वाणिकुयन्त्राणि कुट्टय कुट्टय, ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ फट् स्वाहा।

ऊँ नमो हनुमते पाहि पाहि ऐहि ऐहि सर्व ग्रह भूतानाँ शाकिनी डाकिनीनां विषमदुष्टानाँ सर्वेषामाकर्षय कर्षय, मर्दय मर्दय, छेदय छेदय, मृत्यून् मारय मारय, शोषय शोषय, प्रज्वल प्रज्वल, भूत मण्डल, पिशाच मण्डल, निरसनाय भूत ज्वर, प्रेत ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, विष्णु ज्वर, महेश ज्वरं, छिन्धि छिन्धि, भिंधि भिंधि, अक्षि शूल, पक्ष शूल, शिरोऽभ्यंतर शूल, गुल्म शूल, पित्त शूल, ब्रह्म राक्षस कुल पिशाच कुलच्छेदनं कुरु प्रबल नाग कुलं।

विषं निर्विषं कुरु कुरु झटति झटति, ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूं फट् सर्व ग्रह निवारणाय स्वाहा । ऊँ नमो हनुमते पवन पुत्राय वैश्वानर पाप दृष्टि, चोर, दृष्टि हनुमदाज्ञा स्फुर ऊँ स्वाहा, ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ फट् घे घे स्वाहा।

॥ श्री राम उवाचः ॥

श्री राम ने कहा—

हनुमान पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः,

पातु प्रतीच्याँ रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः ।१ ।
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरी प्रिय नन्दनः,
अधस्ताद् विष्णु भक्तस्तु पातु मध्यं च पावनिः ।२ ।
अवान्तर दिशः पातु सीता शोकविनाशकः,
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्‌भ्यो निरंतरम् ।३ ।

पूर्व में हनुमान, दक्षिण में पवनात्मज, पश्चिम में रक्षोघ्न, उत्तर में सागर पारग, ऊपर से केसरी नन्दन, नीचे से विष्णु भक्त, मध्य में पावनि, अवान्तर दिशाओं सीता शोक विनाशक तथा समस्त मुसीबतों में लंका विदाहक मेरी रक्षा करें ।

सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः,
भालं पातु महावीरो भ्रुर्वोमध्ये निरन्तरम् ।४ ।
नेत्रेच्छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः,
कपोले कर्णमूले च पातु श्री राम किंकरः ।५ ।
नासाग्रमञ्जनीसूनु पातु वक्त्रं हरीश्वर,
वाचं रुद्रप्रिय पातु जिह्वा पिंगल लोचनः ।६ ।

सचिव सुग्रीव मेरे मस्तक की, वायुनन्दन भाल की, महावीर भौंहों के मध्य की, छायापहारी नेत्रों की, प्लवगेश्वर कपोलों की, रामकिंकर कर्णमूल की, अंजनीसुत नासाग्र की, हरीश्वर सुख की, रुद्रप्रिय वाणी की तथा पिंगल लोचन मेरी जीभ की सर्वदा रक्षा करें ।

पातु दन्तान फाल्गुनेष्टाश्चिबुकं दैत्यापादहा,
पातु कण्ठं च दैत्यारीः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः ।७ ।
भुजौ पातु महातेजाः करौ तो चरणायुधः,

नखान नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः ।८ ।

वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः,

लंकाविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ।९ ।

फाल्गुनेष्ट मेरे दाँतों की, दैत्यापादहा चिबुक की, दैत्यारी कंठ की, सुरार्चित मेरे कन्धों की, महातेजा भुजाओं की, चरणायुध हाथों की, नखायुध नखों की, कपीश्वर कोख की, मुद्रापहारी वक्ष की, भुजायुध अगल-बगल की, लंकाविभंजन मेरी पीठ की सदा रक्षा करें ।

वाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः,

गुह्यं पातु महाप्राज्ञो लिंग पातु शिव प्रियः ।१० ।

ऊरु च जानुनी पातु लंका प्रासाद भज्जनः,

जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबल: ।११ ।

अचलोद्धारकः पातु पादौ भाष्कर सन्निभः,

अङ्गान्यमित सत्त्वाढयः पातु पादाँगुलीस्तथा ।१२ ।

रामदूत नाभि की, नीलात्मज कमर की, महाप्राण गुदा की, शिवप्रिय लिंग की, लंका प्रासाद भंजन जानु एवं उरु की, कपिश्रेष्ठ जंघा की, महाबल गुल्फों की, अचलोद्धारक पैरों की, भाष्कर सन्निया अंगों की, अमित सत्ताढव पांव वाली अंगुलियों की सर्वदा रक्षा करें ।

सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान्,

हनुमत्कवच यस्तु पठेद् विद्वान् विचक्षणः ।१३ ।

स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति,

त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयम् सदा ।१४ ।

सर्वानरिपुनक्षणाजित्वा स पुमान्श्रियमाप्नुयात्,

मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तधारम् पठेद यदि ।१५ ।
क्षयाऽपस्मार कुष्ठादि ताप ज्वर निवारणम् ।

महाशूर सभी अंगों की, आत्मवान रोगों से सर्वदा रक्षा करें। जो विद्वान इस विचक्षण कवच का पाठ करता है वह भक्ति एवं मुक्ति को प्राप्त करता है। एक समय या तीनों समय प्रतिदिन जो साधक तीन मास तक इसका पाठ करता है वह क्षणमात्र में ही शत्रु वर्ग को जीत कर लक्ष्मी प्राप्त करता है। आधी रात के समय जल के मध्य स्थित होकर इसके सात पाठ करने से क्षय, अपस्मार, कुष्ठ तथा तिजारी का निवारण होता है।

अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ।१६ ।
अचलाँ श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा,
लिखित्वा पूजयेद यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत् ।१७ ।
यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात्,
विवादे द्यूतकाले च द्यूते राजकुले रणे।१८ ।
दशवारं पठेद् रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः,
विजयं लभते लोके मानुषेषु नराधिपः ।१९ ।

रविवार के दिन अश्वत्थ वक्ष की जड़ के पास बैठकर इसका पाठ करने से संग्राम में विजय तथा अचल लक्ष्मी प्राप्त होती है। इसे लिखकर फिर इसकी पूजा करने पर सर्वत्र विजय मिलती है। इसे धारण करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। वाद-विवाद जुआ राज-घराने एवं युद्ध में इसके दश पाठ करने से विजय प्राप्त होती है।

भूत प्रेत महादुर्गे रणे सागर सम्प्लवे,
सिंह व्याघ्रभये चोग्रे शर शस्त्रास्त्र पातने ।२० ।

श्रृंखला बन्धने चैव कारागृह नियन्त्रणे,
कायस्तोभे वह्नि चक्रे क्षेत्रे घोरे सुदारणे । २१ ।
शोके महारणे चैव बालग्रहविनाशनम्,
सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नुत्यसंशयम् । २२ ।

भूत, प्रेत, महादुख, रण, सागर, सिंह, व्याघ्र, शस्त्रास्त्र के मध्य फंस जाने पर, जंजीरों से बाँधे जाने पर, कारागार में जाने पर, आग में फँसने, शरीर में पीड़ा होने, शोकादि व ब्रह्म ग्रह के निवारण के लिए इसे प्रतिदिन पढ़ना चाहिए ।

भूर्जे व वसने रक्ते क्षीमे व ताल पत्रके,
त्रिगन्धे नाथ मश्यैव विलिख्य धारयेन्नरः । २३ ।
पञ्च सप्त त्रिलोहैर्वा गोपित कवचं शुभम्,
गले कटयाँ बाहुमूले कण्ठे शिरसि धारितम् । २४ ।
सर्वान् कामान् वाप्नुयात् सत्यं श्रीराम भाषितं । २५ ।

भोजपत्र, लाल रेशमी वस्त्र, ताड़पत्र पर इस कवच को त्रिगन्ध की स्याही से लिखकर इसे धारण करना चाहिए । पाँच, सात तथा तीन लोहे के मध्य रखकर गले पर, कमर पर, भुजा पर या सिर पर धारण करने से धारक की समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं । यह श्री राम जी ने कहा है ।

(इति आद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचिते हनुमद् पांचांगे ब्रह्माण्ड पुराणे श्री नारद एवं श्री अगस्त्य मुनि संवादे श्री राम प्रोक्तं एकमुखी हनुमत्कवचं आयभा टीकां सहिते सम्पूर्णम् ॥)



◆ द्वितीय पाठ ◆

पञ्चमुखी हनुमत्कवचम्

॥ विनियोग मन्त्रः ॥

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प सुगन्धि लेकर निम्नलिखित विनियोग मन्त्र का पाठ करके वसुंधरा पर डाल दें।

"ॐ अस्य श्री पञ्च मुख हनुमन्मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋर्षिः गायत्री छन्दः, श्री पञ्च मुख विराट हनुमान देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम्, क्रूं कवचम्, क्रैं अस्त्राय फट् मम सकल कार्यार्थ सिद्धयर्थे जपे। पाठे विनियोगः॥

॥ ईश्वर उवाचः ॥

ईश्वर ने कहा—

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रृणु सर्वाङ्गिसुन्दरम्।
यत्कृतं देव देवेशि ध्यानं हनुमतः प्रियम ।१।

हे सर्वाङ्ग सुन्दरी! देवताओं के भी देवता श्री शिवजी ने अपने प्रिय हनुमान जी का जिस प्रकार ध्यान (साधन) किया था वह मैं तुम्हें बताता हूँ। जरा सावधानी से श्रवण करना।

पंचवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्च नयनैर्युतम्।
बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम्।२।

पाँच मुख वाले महा भयंकर पन्द्रह नेत्र वाले दस भुजा युक्त श्री हनुमान जी भक्तों की समस्त कामनाएं पूर्ण करते हैं।

पूर्वं तु वानर वक्त्रं कोटि सूर्यसमप्रभम्।
दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटी कुटिलेक्षणम्।३।

पूर्व दिशा वाला मुख करोड़ों भास्करों के समान उज्जवल कान्तिमयी है। इनके दाँत भयंकर हैं। क्रोध के कारण इनकी भृकुटि चढ़ी हुई है। इनका श्री मुख वानर स्वरूपा है।

अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम्।
अत्युग्रतेजोवपुष भीषणं भयनाशनम्।४।

इस श्री मुख के दक्षिण की तरफ वाला मुख श्री नरसिंह स्वरूपा है जो कि भीषण भयों का भी नाश कर देता है। यह अति उग्र, शीघ्र प्रभावी, महा भयंकर व महा अद्भुत स्वरूप है।

पश्चिमे गारुडं वक्त्रं वक्रतुंडंमहाबलम्।
सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम्।५।

इनके पश्चिम की तरफ वाला श्री मुख श्री गरुड़ स्वरूपा है जिनकी चौंच टेढ़ी है एवं यह महा बलशाली हैं। यह समस्त नागों का अन्त कर देते हैं। इनकी कृपा से विषों व भूतों का समापन होता है।

उत्तर सौकरं वक्त्रं कृष्णदीप्तनभोमपम्।
पाताले सिहं बेतालं ज्वररोगादिकृन्तनम्।६।

इनसे उत्तर की तरफ वाला श्री मुख सौकर स्वरूपा है जो कि आकाश के समान देदीप्यमान है। यह नीले रंग वाले हैं जो कि पाताल, सिंह, बेताल, ज्वर व अन्य रोगों का विनाश करते हैं।

उर्ध्वं हयाननं घोरं दानवांतकरं परम्।
येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र ताटकाख्यम् महासुरम।७।

ऊपर की तरफ वाले श्री मुख हयानन के समान है जो कि घोर दानवों का भी अन्त कर देते हैं। हे विप्र श्रेष्ठ! इसी स्वरूप से महाबली तारकासुर का वध किया था।

दुर्गते शरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम् ।
ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ।८ ।

जब अत्यधिक दुर्गति हो रही होती है तब इनकी शरण में आने से समस्त शत्रुओं का संहार होता है, दुर्गति का अन्त होता है । इनकी दया की निधि प्राप्त होती है यदि रुद्र स्वरूप पंच मुख वाले श्री हनुमान जी का ऐसा ध्यान किया जाये ।

खड्गं त्रिशुलं खट्वांगं पाशमंकुशपर्वतम् ।
मुष्टौ तु कोमोदकौ वृक्षं धारयन्तं कमंडलुम् ।९ ।

खड्ग, त्रिशुल, खटवांग, पाश, अंकुश, पर्वत, मुष्ठि, कौमोदकी, कमण्डल का धारण किया हुआ है ।

भिंदिपालं ज्ञानमुद्रां दसर्वि मुनि पुंगव ।
एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम ।१० ।
प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभूषण भूषितम् ।
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगंधानुलेपनम् ।११ ।

भिंदिपाल, ज्ञानमुद्राओं को प्रदर्शित करते हुए समस्त आभरणों से विभूषित श्री हनुमान जी जो कि श्वासन पर बैठे हुए हैं। इन्होंने माला एवं दिव्य गंधादि धारण कर रखी है । ऐसे स्वरूप का मैं ध्यान करता हूँ ।

सर्वैश्वर्यमयं देवं हनुमद् विश्वतोमुखम् ।
पंचास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं वक्त्रं संशखविभृतं कपिराजवीर्यम् । पीताम्बरादिमुकुटैरपि शोभितांगं पिंगाक्षमञ्जनिसुतं ह्यनिशं स्मरामि ।१२ ।

समस्त ऐश्वर्यों के साथ पीताम्बर एवं मुकुट से सुशोभित, कवि श्रेष्ठ,

जिनके माथे पर चन्द्र सोभायमान है। ऐसे पीले नेत्रों वाले श्री हनुमान जी का मैं स्मरण करता हूँ।

मर्कटस्य महोत्साहं सर्वशोक विनाशनम्।

शत्रु संहरमाम रक्ष श्रिय दापयम हरिम्। १३।

ऐसे हनुमान जी! आप बहुत उत्साही हैं और आप समस्त शोकों का शमन करते हैं। आप मेरे शत्रुओं का संहार कीजिये व मेरी रक्षा कीजिये।

॥ अथ मूल मन्त्र: ॥

अब मूल मन्त्र कहते हैं—

ऊँ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥

ऊँ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपि मुखाय सकलशत्रु संहारणाय स्वाहा ॥

ऊँ नमो भगवते पंच वदनाय दक्षिण मुखाय कराल वदनाय नरसिंहाय सकल भूत प्रेत प्रमथनाय स्वाहा ॥

ऊँ नमो भगवते पंच वदनाय पश्चिम मुखायगरुडाय सकलविषहराय स्वाहा ॥

ऊँ नमो भगवते पंचवदनाय उत्तर मुखाय आदि वराहाय सकलसम्पत्काराय स्वाहा ॥

ऊँ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकल जनवशीकरणाय स्वाहा ॥

॥ अथ विनियोग मन्त्र ॥

अब विनियोग मन्त्र कहते हैं—

ऊँ अस्य श्री पञ्चमुखिहनुमत्कवच स्तोत्र मंत्रस्य

श्रीरामचन्द्र ऋषिरनुष्टुपछंदः श्री सीता रामचन्द्रो देवता ॥

हनुमानति बीजम् ॥

वायुदेवता इति शक्तिः ॥

श्रीरामचन्द्रावर प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ अथ करन्यास : ॥

अब कर न्यास कहते हैं—

ॐ हं हनुमान अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥

ॐ वं वायु देवता तर्जनीभ्यां नमः ॥

ॐ अं अंजनि सुताय मध्यमाभ्यां नमः ॥

ॐ रं रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः ॥

ॐ हं हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥

ॐ रुं रुद्र मूर्तये करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

॥ अथ हृदयादिन्यासः ॥

अब हृदयादि न्यास कहते हैं—

ॐ हं हृदयाय नमः ॥

ॐ वं शिर से स्वाहा ॥

ॐ अं शिखायै वषट् ॥

ॐ रं शिर से स्वाहा ॥

ॐ हं त्रिनेत्राथ वौषट् ॥

ॐ रुं अस्त्राय फट् ॥

॥ अथ ध्यानम् विनियोग सहितम् ॥

अब विनियोग सहित ध्यान वर्णित है ।

श्रीरामदूताय आंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोकनिवारणाय महाबलप्रचण्डाय लंकापुरीदहनाय फाल्गुनसखाय कोलाहलसकलब्रह्मांडविश्वरूपाय सप्त-समुद्रान्तराललंघिताय पिंगलनयनामितविक्रमाय सूर्य-बिम्बफलसेवाधिष्ठित पराक्रमाय संजीवन्या अंगद-लक्ष्मणमहाकपिसैन्य प्राणदात्रेदशग्रीवविध्वंसनायरामेष्टाय सीतासह रामचन्द्र वरप्रसादाय षट्प्रयोगागमपंचमुखि-हनुमन्मन्त्रजपे विनियोगः

॥ अथ कवच मन्त्रः ॥

अब कवच का मन्त्र कहते हैं—

(अब बीज शक्ति युक्त अत्यधिक प्रभावशाली मन्त्र कहे गये हैं । इन्हें सावधानी से पढ़ें ।)

ऊँ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ।

ऊँ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय वं वं वं वं वं फट् स्वाहा ॥

ऊँ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय फं फं फं फं फं स्वाहा ॥

ऊँ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा ॥

ऊँ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय ठं ठं ठं ठं ठं स्तंभनाय स्वाहा ॥

ऊँ ह्रीं हरिमर्कटमर्कटाय डं डं डं डं डं आकर्षणाय

सकलसम्पत्काराय पंचमुखिवीरहनुमते परयन्त्र-तंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ॥

।अथ दिग्बन्धनम् ।ऊँ कं, खं, गं, घं, ङं, चं, छं, जं, झं, ञं, टं, ठं, डं, णं, तं, थं, दं, धं, नं, पं, फं, बं भं, मं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, क्षं स्वाहा । इतिदिग्बन्धः ।

ऊँ पूर्व कपिमुखाय पंचमुखिहनुमते ठं ठं ठं ठं ठं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥

ऊँ दक्षिणमुखे पंचमुखिहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ह्रां, ह्रां, ह्रां, ह्रां, ह्रां सकल भूत प्रेतदमनाय स्वाहा ॥

ऊँ पश्चिममुखे गरुडासनाय पंचमुखिवीरहनुमते मं, मं, मं, मं, मं सकलविषहराय स्वाहा ॥

ऊँ उत्तरमुखे आदि वराहाय लं, लं, लं, लं, लं नृसिंहायनीलकंठायपंचमुखिहनुमते स्वाहा ॥

ऊँ उर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय, रुं रुं रुं रुं रुं रुद्रमूर्तयेपंचमुखिहनुमते सकलजनवश्यकराय स्वाहा ॥

ऊँ अन्जनीसुताय वायुपुत्रायमहाबलाय रामेष्ट-फाल्गुनसखाय सीताशोकनिवारणाय लक्ष्मणप्राणरक्षकाय कपिसैन्यप्रकाशायदशग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवर-प्रसादकाय महावीर्याप्रथमब्रह्मांडनायकायपंचमुखिहनुमते भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-अन्तरिक्षग्र हपरयन्त्र-परमयन्त्र-परतन्त्रसर्वग्रहोच्चाट नाय सकलशत्रु

संहारणाय पंचमुखिहनुमद्वरप्रसादक सर्व रक्षकाय जं जं जं जं जं स्वाहा ॥

॥ अथ फल श्रुतिः ॥

अब कवच के पाठ को करने से प्राप्त होने वाले लाभ व्यक्त करता हूँ।

इदं कवचंपठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः ।
एकवारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रु निवारणम् । १४ ।

इस कवच को जो नर पढ़ता है। यह महा कवच है। इसे एक बार जपने से समस्त शत्रुओं का निवारण होता है।

द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् ।
त्रिवारं पठेत् नित्यं सर्वसंपत्करं परम् । १५ ।

प्रतिदिवस दो बार इसका पाठ करने से परिवार में पुत्र पोत्रादि की वृद्धि होती है। प्रतिदिन तीन बार पाठ करने से समस्त समपत्तियाँ प्राप्त होती हैं।

चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम् ।
पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणम् । १६ ।

चार बार प्रतिदिन पाठ करने से समस्त रोगों का निवारण होता है। पाँच बार नित्य पाठ करने से समस्त लोकों का वशीकरण होता है।

षड्वारं तु पठेन्नित्यं सर्वदेव वशीकरम् ।
सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वकामार्थसिद्धिदम् । १७ ।

प्रतिदिन छः बार पाठ करने से समस्त देवों का आकर्षण होता है। सात बार नित्य पढ़ने से समस्त सौभाग्यों का उदय होता है।

अष्टवारं पठेन्नित्यं सर्व सौभाग्यदायकम् ।
नववारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्य प्रदायकम् । १८ ।

नित्य आठ बार पाठ करने से अभिलाषा पूर्ण होती है । नव बार नित्य पाठ करने से राज्य के सुखादि का उपभोग मिलता है ।

दशवारं च पठेन्नित्यं त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम् ।
एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धि लभेन्नरः । १९ ।

प्रतिदिवस दस बार इसका पाठ करने से त्रैलोकय का ज्ञान प्राप्त होता है तथा प्रतिदिन ग्यारह बार पाठ करने से साधक के समस्त कार्य सिद्ध होते हैं (या सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं ।)

(इति अद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचिते हनुमद् पंचांगे श्री सुदर्शन संहितायां श्री राम भगवती सीता प्रोक्तं पञ्चमुखी श्री हनुमत्कवचं आयभा टीका सहितम् सम्पूर्णम् ॥)



◆ तृतीय पाठ ◆

सप्तमुखी हनुमद् कवचम्

अथ सप्तमुखी हनुमत्कवचम् ॥

अब सप्तमुखी श्री हनुमान जी का कवच कहता हूँ।

उक्तं चाथर्वणरहस्ये ॥

यह पाठ अथर्वण रहस्य में कहा गया है।

अथ विनियोग मन्त्रः ॥

अब विनियोग मन्त्र कहता हूँ।

ॐ अस्य श्री सप्तमुखि वीर हनुमत्कवचस्तोत्र मन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री सप्तमुखी कपिः परमात्मा देवता, ह्रां बीजम, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकम् मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ करन्यासः ॥

अब करन्यास कहता हूँ।

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥
ॐ ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः ॥

अब हृदय न्यास कहता हूँ।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥

ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा ॥

ॐ ह्रूँ शिखाये वषट् ॥

ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥

ॐ ह्रौं नेत्र त्रयाय वौषट ॥

ॐ ह्रः अस्त्राय फट्

अथ सप्तमुखी हनुमत्धायनम् ॥

अब सात मुख वाले श्री हनुमान जी का ध्यान कहता हूँ।

वन्दे वानर सिंह सर्प रिपु वाराह अश्व गो मानुषैर्युक्तं सप्तमुखैः करैर्द्रुम गिरिम् चक्रम् गदाम खेटकम ॥ खट्वांगं हलमंकुशम् फणि सुधा कुम्भौ शराब्जा भयाञ्छूलम् सप्तशिखम् दधानममरैः सेव्य कपिं कामदम् ॥

अपने हस्तकमलों में वृक्ष, पहाड़, चक्र, गदा, खेटक, खट्वांग, हल, अंकुश, सर्प अमृतकलश, बाण, कमल, अभय (मुद्रा) शूल तथा अग्नि को लिये हुए हैं। इनके श्री मुख वानर, सिंह, गरुड, वराह, अश्व, शत्रु तथा मनुष्य के समान हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

ब्रह्मोवाच ॥

ब्रह्मा जी कहते हैं।

सप्त शीर्ष्ण प्रवक्ष्यामि कवचं सर्व सिद्धिदम् ।

जप्तवा हनुमतो नित्यं सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥

सर्व सिद्धियों को देने वाले हनुमान जी जिनके सात मुख हैं उनका कवच श्रवण करो। प्रतिदिन हनुमान जी का जप करने से समस्त पापों का शमन होता है।

सप्त स्वर्ग पतिः पायाच्छिखां में मारुतात्मजः।
सप्त मूर्धा शिरोऽव्यानमे सप्तार्चिमलि देशकम् ॥

सात स्वर्गों के स्वामी मारुति के पुत्र श्री हनुमान जी मेरी शिखा की रक्षा करें। सप्त शिरो वाले श्री हनुमान जी मेरे शिर की रक्षा करें। सप्तार्चि मेरे भाल की रक्षा करें।

त्रिः सप्तनेत्रो नेत्रेऽव्यात्सप्त स्वर गतिः श्रुती ॥
नासां सप्तपदार्थोंव्यान्मुखः सप्तमुखोऽवतु ॥

इक्कीस नेत्र वाले मेरे नेत्रों की, सप्त स्वर गति मेरे दोनों कानों की, सप्त पदार्थ मेरे नाक की व सात मुख वाले श्री हनुमान जी मेरी रक्षा करें।

सप्तजिह्वस्तु रसनांरदान्सप्त हयोऽवतु।
सप्तच्छन्दो हरिः पातु कण्ठं बाहु गिरि स्थितः ॥

सात जीभों वाले मेरी जीभ की, सप्त हय मेरे दाँतों की, सप्त छन्द वाले हरि मेरे कण्ठ की व पर्वत पर स्थित श्री हनुमान जी मेरे बाहुओं की रक्षा करें।

करौ चतुर्दशकरो भूधरोऽव्यान्मभांगुलीः।
सप्तर्षि ध्यातो हृदय मुदरं कुक्षि सागरः ॥

चौदह भुजा वाले मेरे हाथों की, भूधर मेरी अंगुलियों की, सप्त ऋषियों के ध्यान में रहने वाले मेरे हृदय की व कुक्षि सागर श्री हनुमान जी मेरे पेट की रक्षा करें।

सातद्वीप पतिश्चित्तं सप्त व्याहृति रूपवान्।

कटिं मे सप्त संस्थार्थ दायकः सक्थिनी मम् ॥

सात द्वीपों के स्वामी मेरे चित्त की, सप्त व्याहृति मेरी कटि की, सप्त संस्थार्थदायक मेरी सक्थियों (शरीर के प्रमुख ग्यारह मर्म स्थानों) की रक्षा श्री हनुमान जी करें।

सप्त ग्रह स्वरूपी मे जानुनी जंघ्ययोस्तथा।
सप्त धान्य प्रियः पादौ सप्त पाताल धारकः ॥

सूर्य चन्द्रादि सप्त ग्रह स्वरूपी मेरे जानुओं की, सप्त धान्य प्रिय मेरी जंघाओं की, सप्त पाताल धारक मेरे पाँवों की रक्षा करें।

पशुन्धनं च धान्यं च लक्ष्मीं लक्ष्मी प्रदोऽवतु।
दारान् पुत्रांश्च कन्याश्य कुटुम्ब विश्व पालकः ॥

विश्व का पालन करने वाले मेरे पशु धन, अन्न की, धन की, लक्ष्मी की, पत्नी की, पुत्रों की, कन्या की तथा मेरे कुटुम्ब की रक्षा करें।

अनुक्त स्थानमपि मे पायाद्वायु सुतः सदा।
चौटेभ्यो ब्याल दंष्ट्रिभ्याः श्रृंगिभ्यो भूत राक्षसात् ॥

जो मेरे द्वारा नहीं कहे गये उन अंगों की वायु पुत्र रक्षा करें। इसी भाँति से चोर, भयानक दाँतों व सींगों वाले हिंसक पशुओं, भूत व राक्षसों से।

दैत्यभ्योऽप्यथ यक्षेभ्यो ब्रह्म राक्षस जाद्भ्यात्।
दंष्ट्रा कराल वदनो हनुमान्मां सदाऽवतु ॥

दैत्य, यक्ष, ब्रह्म राक्षसादि के प्रकोपों से श्री दंष्ट्रा कराल बदना हनुमान जी रक्षा करें।

पर शस्त्र मन्त्र तन्त्र यन्त्राग्नि जलविद्युतछ।

रुद्रांशः शत्रु संग्रामात्सर्वा वस्थासु सर्वभूत् ॥

दूसरों (विरोधियों) के द्वारा चलाये जा रहे शस्त्र, मन्त्र यन्त्र, तन्त्र, जल, विद्युत, रुद्राश एवं अन्य समस्त स्थितियों में सर्वमृत मेरी रक्षा करें।

(आगे बीज शक्ति युक्त मन्त्रादि हैं। इन्हें सावधानी से पढ़ें।)

ॐ नमो भगवते सप्त वदनाये आद्य कपि मुखाय वीर हनुमते सर्व शत्रु संहारणाय ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं[१] ॐ नमः स्वाहा । १ ।

ॐ नमो भगवते सप्त वदनाय द्वितीय नार सिंहास्याय अत्युग्रते तेजोवयुषे भीषणाय भय नाशनाय हं हं हं हं हं हं हं[२] ॐ नमः स्वाहा । २ ।

ॐ नमो भगवते सप्तः वदनाय तृतीय गरूड़ वक्राय वज्र दंष्ट्राय महाबलाय सर्व रोग विनाशनाय मं मं मं मं मं मं मं[३] ॐ नमः स्वाहा । ३ ।

ॐ नमो भगवते सप्त वदनाय चतुर्थ क्रोड़ तुण्याय सौमित्रि रक्षकाय पुत्राद्यभिवृद्धि कराय लं लं लं लं लं लं लं[४] ॐ नमा स्वाहा । ४ ।

ॐ नमो भगवते सप्त वदनाय पंचमाश्ववदनाय रुद्र मूर्त्तये सर्व वशीकरणाय सर्व निगम स्वरूपाय रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं[५] ॐ नमः स्वाहा । ५ ।

ॐ नमो भगवते सप्त वदनाय षष्ठगो मुखाय सूर्य स्वरूपाय सर्व रोग हराय मुक्ति दात्रे ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ[६] ॐ नमः स्वाहा । ६ ।

ॐ नमो भगवते सप्त वदनाय सप्तम् मानुष मुखाय रुद्रावताराय अंजनी सुताय सकल दिग्यशो विस्तार कार्य वज्र देहाय सुग्रीव साह्य कराय उदधि लंघनाय सीता शुद्धि[७] कराय[८] लंका दहनाय अनेक[९] राक्षसांतकाय रामानंद[१०] दायकाय अनेक पर्वतोत्पाटकाय सेतु बंधकाय कपि सैन्य नायकाय रावणांतकाय ब्रह्मचर्याश्रभिणे कौपीन ब्रह्म सूत्र धारकाय राम हृदयाय सर्व दुष्ट ग्रह निवारणाय शाकिनी, डाकिनी, बेताल, ब्रह्म राक्षस, भैरव ग्रह, यक्ष ग्रह, पिशाच ग्रह, ब्रह्म ग्रह, क्षत्रिय ग्रह, वैश्य ग्रह, शूद्र ग्रहांत्यजग्रम्लेच्छ ग्रह, सर्प ग्रहोच्चाटकाय मम सर्व कार्य साधकाय सर्व शत्रु संहारकाय सिंह व्याघ्रादि दुष्ट सत्त्वाकर्षकायै काहिकादि विविध ज्वरच्छेदकाय पर यन्त्र मन्त्र तन्त्र नाशकाय सर्व व्याधि निकृंतकाय सर्पादि सर्व स्थावर जंगम विष स्तंभन कराय, सर्व राज भय, चौर भयाग्नि भय प्रशमनायाध्यात्मिकाधि दैविकाधि भौतिक ताप जय निवारणाय सर्व विद्या संपत्सर्व पुरुषार्थ दायकायासाध्य कार्य साधकाय सर्व वर प्रदाय सर्वाभीष्ट कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ नमः स्वाहा ।६।

---

१. सात बार 'ठं' बोला जायेगा। २. सात बार 'हं' जपा जायेगा। ३. सात बार 'मं' का जप होगा। ४. सात बार 'लं' का पाठ होगा। ५. सात बार 'रुं' का जाप होगा। ६. सात बार 'ॐ' का पाठ होगा। ७. शुद्धि। ८. कराय। ९. अनेक। १०. रामऽऽनन्द (इतिशुद्धम्)

अथ फल श्रुति ॥

अब इस कवच के पाठ से प्राप्त होने वाले फल कहते हैं ।

य इदं कवचं नित्यं सप्तास्यस्य हनुमतः ।
त्रि संध्यं जपते नितयं सर्व शत्रु विनाशम् ॥

इस सप्त मुखी हनुमत कवच का प्रति दिन जो तीनों संध्याओं में पाठ करता है उसके समस्त शत्रुओं का विनाश होता है ।

पुत्र पौत्र प्रदं सर्वं संपद्राज्य प्रदं परम् ।
सर्व रोग हरं चायु कीर्तिदं पुण्यवर्द्धनम् ॥

उसके पुत्र पोत्रादि वंश बढ़ता है । उसको सम्पदा व राज्य के लाभ मिलते हैं । समस्त रोगों का हनन होता है । आयु व कीर्ति के साथ पुण्य भी बढ़ते हैं ।

राजानं स वंश नीत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।
इदं हि परमं गोप्यं देयं भक्ति युताय च ॥

यह साधक राजाओं को वशीभूत करके त्रैलोक्य में विजयी होता है । यह अत्यन्त गुप्त पाठ है । केवल श्रद्धा भक्ति वाले को ही प्रदान करना चाहिये ।

न देयं भक्ति हीनाय दत्त्वा स निरयं व्रजेत् ॥

जो भक्ति हीन हो, श्रद्धा हीन हो, उसे यह पाठ कभी नहीं देना चाहिये ।

नामानि सर्वाव्यप वर्गा दानिरूपाणिविश्वानि च यस्य सन्ति ।
कर्माणि देवैरपि दुर्घटानि त मारुतिं सप्तमुखं प्रपद्ये ॥

मैं ऐसे श्री हनुमान जी की चरण शरण में हूँ जिनके कार्य अत्यन्त

भयानक हैं और जिन कार्यों को कोई भी कर पाने में असमर्थ है । इनके नाम व स्वरूप भोग मोक्षादि के दाता हैं ।

(इति आद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचते हनुमत्यांचागे अथर्वण रहस्ये ब्रह्मोवाच सप्त मुखी हनुमत्कवचम् आयभा टीकां सहिते सम्पूर्णम् ॥)

❑❑❑

◆ चतुर्थ पाठ ◆

एकादश मुखी हनुमत्कवचम्

अथ श्री एकदाश मुख हनुमत्कवचम् ॥

अब ग्यारह मुख वाले हनुमान जी का कवच कहता हूँ।

उक्तं चागास्ति संहितायाम् ॥

यह कवच अगस्त संहिता में कहा गया है।

लोपामुद्रोवाच ॥

लोपा मुद्रा[१] ने कहा।

कुम्भोद्भव दयासिन्धो कृतं हनुमतः प्रभोः ।
यन्त्र मन्त्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया ॥

हे दया के सिन्धु (सागर), हे कुम्भ से उत्पन्न होने वाले प्रभु ! आपने अपने श्री मुख से हनुमान जी के यन्त्र मन्त्रादिक मुझको बताये हैं।

दया कुरुमपि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे ।
कवचं वायु पुत्रस्य एकादश मुखात्मनः ॥

अब कृपा करके हे प्राण नाथ मुझे ग्यारहा मुख वाले श्री हनुमान जी का कवच बतायें।

इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् ।

१—अगस्त ऋषि की स्त्री जो उन्होंने समस्त प्राणियों के उत्तम उत्तम अंगों को लेकर बनाई थी। निर्माण के पश्चात् यह स्त्री उन्होंने विदर्भ राज को सौप दी थी। जब यह स्त्री युवा हुई थी तब इसका विवाह अगस्त ऋषि के साथ कर दिया गया था। आकाश लोक में दक्षिण दिशा की तरफ अगस्त मंडल सितारा समूह के पास एक तारे का उदय होता है उसे भी लोपामुद्रा कहते हैं।

वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपा मुद्रां प्रति प्रभुः ॥

अपनी प्रिय पत्नी के इस प्रकार के शब्द श्रवण करके उन्होंने लोपामुद्रा से इस भाँति से कहा।

अगस्त्य उवाचः ॥

अगस्त जी ने कहा।

नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम्।
ब्रह्म प्रोक्तं तु कवचं श्रृणु सुन्दरि सादरात्॥

हे सुन्दरी! ब्रह्मा जी के द्वारा कहा गया राम दूत श्री हनुमान जी का एकादश मुख वाला कवच उन्हें नमस्कार करके तुम्हें सुनाता हूँ।

सनन्दनाय च महच्चतुरानन भाषितम्।
कवचं कामदं दिव्यं रक्षः कुल निबर्हणम्॥

यह कवच चार मुख वाले श्री ब्रह्मा जी ने श्री सनन्दनादि से कहा था। यह अभीष्ट प्रदाता है, दिव्य है व इससे रक्षा होती है।

सर्व सम्पत्तप्रदं पुण्यं मत्यनां मधुर स्वरे ॥

समस्त प्रकार की सम्पत्तियाँ प्रदान करता है। यह पुण्यकारी कवच है जो कि मधुर स्वर से कहा गया था।

अथ विनियोग मन्त्रः ॥

अब विनियोग मन्त्र कहता हूँ।

ॐ अस्य श्री ऐकादश मुखि हनुमत्कवच मन्त्रस्य सनन्दन ऋषिः, प्रसन्नात्मा एकादशमुखि श्री हनुमान देवता, अनुष्टुप छन्दः, वायु सुत्त बीजम् मम सकल कार्यार्थे प्रमुखतः मम प्राण शक्ति वर्द्धनार्थे जपे। पाठे विनियोगः ॥

अथ हृदयादि न्यासः ॥

अब हृदय न्यास कहता हूँ।

ऊँ स्फ्रें हृदयाय नमः ॥

ऊँ स्फ्रें शिर से स्वाहा ॥

ऊँ स्फें शिखाये वषट् ॥

ऊँ स्फें कवचाय हुम ॥

ऊँ स्फें नेत्र त्रयाय वोषट् ॥

ऊँ स्फें कवचाय हुम् ॥

अथ करन्यासः ॥

अब कर न्यास कहता हूँ।

ऊँ स्फें बीज शक्तिधृक् पातु शिरो मे पवनात्मजा अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥

ऊँ क्रौं बीजात्मानथनयोः पातु मां वानरेश्वरः तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥

ऊँ क्षं बीज रूप कर्णो मे सीता शोक विनाशनः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥

ऊँ ग्लौं बीज वाच्यो नासां में लक्ष्मण प्राण प्रदायकः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥

ऊँ व बीजार्थश्च कण्ठं मे अक्षय क्षय कारकः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥

ऊँ रां बीज वाच्यो हृदयं पातु में कपि नायकः करतल

कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥

अथ कवचम् ॥

अब कवच कहता हूँ ।

ऊँ व बीजं कीर्तितः पातु बाहु में चाञ्जनी सुतः ।
ऊँ ह्रां बीजं राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातु चोर दम् ॥

ऊँ 'वं' बीज की कीर्तिमयी अंजनी के पुत्र मेरी दोनों बाहों की रक्षा करें। ऊँ 'ह्रां' बीजमयी राक्षसों का अहंकार नष्ट करने वाले मेरे उदर की रक्षा करें।

सौमं बीज मयी मध्यं में पातु लंका विदाहकः ।
ह्रीं बीज धरो गुह्यं मे पातु देवेन्द्र वन्दितः ॥

'सौं' बीज मयी लंका को अग्नि से जलाने वाले मेरी नाभि की रक्षा करें। 'ह्रीं' बीज धारी देवताओं के राजा द्वारा वन्दित मेरे गुप्तांग की रक्षा करें।

रं बीजात्मा सदा पातु चोरु में वार्धिलंघनः ।
सुग्रीव सचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः ॥

'रं' बीज की आत्मा वाले वाधि लंधन मेरे घुटनों की रक्षा करें। सुग्रीव के सचिव मनोजव मेरे जानुओं की रक्षा करें।

आपाद् मस्तकं पातु रामदूतो महाबलः ।
पूर्वे वानर वक्त्रोमां चाग्नेय्यां क्षत्रियान्त कृत् ॥

महाबलशाली श्री राम जी के दूत मेरे पूरे शरीर की रक्षा करें। पूर्व दिशा में वानर के श्री मुख वाले, अग्नि दिशा में क्षत्रिय के श्री मुख वाले।

दक्षिणे नारसिंहस्तु नेर्ऋत्यां गण नायकः ।

वारुण्यां दिशि मामव्यात्खग वक्त्रो हरीश्वरः ॥

दक्षिण दिशा में नरसिंह के श्री मुख वाले, नेत्रऋत्य कोण वाली दिशा में गणेश के श्री मुख वाले, पश्चिम दिशा में हरीश्वर के से श्री मुख वाले।

वायव्यां भैरव मुखः कौवेर्यां पातु में सदा ।
क्रोड़ास्यः पातु मां नित्य मीसान्यां रुद्र रूप धृक् ॥

वायव्य कोण की दिशा में भैरव से श्री मुख वाले, उत्तर दिशा में वाराह के से श्री मुख वाले ईशान दिशा में रुद्र के से श्री मुख वाले सर्वदा मेरी रक्षा करें।

रामस्तु पातु मां नित्यं सौम्य रूपी महाभुजः ।
एकादश मुखस्यैतद् दिव्यं वै कीर्तितं मया ॥

विशाल भुजाओं वाले सौम्य श्री स्वरूपा भगवान राम प्रतिदिन मेरी रक्षा करें। इस प्रकार से दिव्य एकादश मुखी कवच कहा है जो कि दिव्य है।

रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्व सम्पद् विधायकम् ।
पुत्रदं धनदं चौग्रं शत्रु सम्पतिमर्दनम् ॥

जो कि रक्षा करता है, कामना पूर्ण करता है, समस्त सम्पदाओं का दाता है, पुत्र देता है, धन देता है। शत्रुओं को व उनकी सम्पत्ति को नष्ट करता है।

स्वर्गाऽपवर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम् ।
एतत् कवचम ज्ञात्वा मन्त्र सिद्धिर्न जायते ॥

यह दिव्य कवच स्वर्गादि मोक्ष दायक है। सोची जाने वाली बातें पूर्ण करता है। इस कवच के बिना कभी भी मन्त्र सिद्ध नहीं होता है।

अथ फलश्रुतिः ॥

अब कवच के पाठ से प्राप्त होने वाले लाभ कहता हूँ।

चत्वारिंश सहस्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः ।
एक वारं पठेन्नित्यं कवच सिद्धिदं महत् ॥

साधक शुद्धात्मा होकर इसके चालीस हजार पाठ करे एवं एक बार नित्य पढ़ते रहने से यह कवच महत्वपूर्ण सिद्ध हो जाता है।

द्वि वारं वा त्रि वारं वा पठेदायुष्माप्नुयात् ।
क्रमादेकादशादेवमावर्तन कृतात् सुधीः ॥

इसी प्रकार से दो बार, तीन बार या पढ़ते रहने से आयु बढ़ती है। इसके प्रतिदिन ११ या १२ पाठ करते रहने से।

वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नाऽत्र संशयः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नेति पुरुषः ॥
ब्रह्मोदीप्तिमेताद्धि तवाऽग्रे कथितं महत् ॥

वर्ष की समाप्ति पर स्वयं हनुमान दर्शन देकर साक्षात होते हैं। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये। जो जो कार्य की चिन्ता होती है वही वही काम पूर्ण हो जाते हैं। मैंने ब्रह्मा जी के द्वारा कहा गया कवच तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

इत्येव मुक्त्वा कवचं महर्षिस्तूष्णी वभूवेन्दुमुखी निरिक्ष्य ।
संहृष्ट चिताऽपि तदा तदीय पादौ ननामाऽति मुदास्व भर्तुः ॥

इस प्रकार से अपनी चन्द्र मुखी लोपामुद्रा को बताकर उसे देखकर मौन हो गये। इसके बाद प्रसन्न चित्त से उसने अगस्त्य जी को प्रणाम किया।

(इति आद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचिते हनुमद् पाचांगे अगस्त संहितोक्त आयभा टीका सहिते श्री एकादश मुखी हनुमत्त कवचम् सम्पूर्णम् ॥)



◆ पञ्चम पाठ ◆

लांगूलास्त्र शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्रम्

अथ विनियोग मन्त्रः ॥

अब विनियोग का मन्त्र कहता हूँ।

ऊँ अस्य श्रीहनुमल्लाङ्गूल शत्रुञ्जय स्तोत्र मंत्रस्य ईश्वर ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, श्रीहनुमान् रुद्रो देवता हं बीजं स्वाहा शक्तिः, ह्रां हा हा इतिकीलकम् मम् सर्वारिष्टक्षयार्थे जपे विनियोगः ।

अथ करन्यासः ॥

अब करन्यास कहता हूँ।

ऊँ ह्रां आंजनेयाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ऊँ ह्रीं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः ।

ऊँ ह्रूं अक्षयकुमार विध्वंसकाय मध्यमाभ्यां नमः ।

ऊँ ह्रैं लंङ्काविदाकाय अनामिकाभ्यां नमः ।

ऊँ ह्रौं रुद्रावताराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ऊँ ह्रः सकलरिपु संहारणाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अथ हृदयादिन्यासः ॥

अब हृदय न्यास कहता हूँ।

ऊँ ह्रां आंजनेयाय हृदयाय नमः।

ऊँ ह्रीं रामदूताय शिरसे स्वाहा ।

ऊँ ह्रूं अक्षयकुमार विध्वंसकाय शिखायै वषट् ।

ॐ हैं लङ्काविदाहकाय कवचाय हुम ।

ॐ ह्रौ रुद्रावताराय नेत्राभ्यां वौषट् ।

ॐ ह्रः सकलरिपु संहारणाय अस्त्राय फट् ।

अथ हनुमतः शत्रुञ्जय माला मन्त्र ॥

अब हनुमान जी का शत्रुञ्जय माला मन्त्र कहता हूँ ।

ॐ ऐं श्री ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हस्फ्रें खफ्रें हस्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमण पराक्रम श्रीराम भक्त मम् परस्य च सर्व शत्रून् चतुर्वर्ण सम्भवान् पुंस्त्रीनपुंसकान् भूत भविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थान समीपस्थान् नाना नामधेयान् नाना संकर जातीयान् कलत्रपुत्रमित्रभृत्य बन्धु सुहृत्समेतान् प्रभु शक्ति सहितान् धनधान्यादि संपत्तियुतान् राज्ञो राजसेवकान् मन्त्रि सचिव सखीनात्यन्तिकान् क्षणेन त्वरया एतद्दिनावधि नानोपायैर्मारय-२ शस्त्रैश्छेदय-२ अग्निना ज्वालय-ज्वालय दाहय दाहय अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेन आत्रोटय-२ घातय-२ भक्तजनवत्सल सीता शोकापहारक सर्वत्र मामेनं च रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं भूत संघैः सह् भक्षय क्रुद्ध चेतसा नखैर्विदारय-२ दशादस्मादुच्चाटय-२ पिशाचवद् भ्रंशय-२ घे घे घे हुं हुं हुं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते श्री हनुमते महाबल पराक्रमाय महाविपत्ति निवारणाय भक्तजन मनः संकल्पनाय कल्पद्रुमाय दुष्टजन मनोरथस्तम्भनाय प्रभञ्जन प्राणप्रियाय स्वाहा ।

अथ ध्यानम् ॥

अब ध्यान करता हूँ।

श्रीमन्तं हनुमन्तमात्त रिपुभिद् भूभृत्तनुभ्राजितं वल्गद्वालधि वद्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम् ॥ रोषारक्त पिशंगनेत्र नलिनभ्रूभंग संग स्फुरत्प्रोद्यच्चण्ड मयूख मण्डल मुखम् दुःखापहम् दुःखिनाम् ।

कौपीनं कटि सूत्र मौञ्ज्यजिन युग्देहं विदेहात्मजा प्राणाधीश पदारविन्द निहतं स्वान्तम् कृतान्तं द्विषाम् । ध्यत्वैवं समराङ्गणे स्थितमथाऽनीये स्वहृत्पङ्कजे संपूज्याखिल पूजनोक्त विधिना संप्रार्थयेत्प्रार्थितम् ।

ध्यान मन्त्र बोलकर 'अरे मल्ल चटख' कहकर कपि मुद्रा प्रदर्शित करें।

अथ शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्रम् ॥

अब शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्र कहता हूँ।[१]

ॐ हनूमान्नञ्जनी सूनो महाबल पराक्रम । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

अक्षक्षपण पिङ्गाक्षदितिजा सुक्षयङ्कर । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

मर्कटाधिपमार्तण्ड मण्डल ग्रासकारंक । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

१—यह स्तोत्र सरल संस्कृत में हैं तथा इसके अर्थ व भाव इससे स्पष्ट ज्ञात होते हैं अतः इसका टीका नहीं किया गया है।

रुद्रावतार संसार दुःख भारापहारक । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

श्रीरामचरणाम्भोज मधुपायित मानस ।लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

बालिकालकोरदक्रान्त सुग्रीवोन्मोचन प्रभो । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

सीता विरह वारीशमग्नि सीतेश तारक। लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

रक्षोराज प्रतापाग्नि दह्यमान जगद्धित । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

ग्रस्ताशेष जगत्स्वास्थ्य राक्षसाम्भोधिमन्दर । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

पुच्छगुच्छ स्फुरद् धूमध्वजदग्धनिकेतन । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

जगन्मनो दुरल्लंघ्य पारावार विलंघन । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

स्मृति मात्र समस्तेष्ट पूरणः प्रणतप्रिय । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

रार्त्रि चरचमूराशि कर्तनैक विकर्तन । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

जननी जानकी जानि प्रेम पात्र परंतप । लोल-

लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

भीमादिक महावीर वीरावेशादि तारक । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

वैदेही विरहाक्रान्त रामरोषैकविग्रह । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

वज्रांगनखदंष्ट्रेश बज्रिबज्रावगुंठन । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

अखर्व गर्व गंधर्व पर्वतोद्भेदनश्वर । लोललाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

लक्ष्मण प्राण संत्राणं त्रातस्तीक्ष्ण करान्वय । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

रामादिविप्रयोगोर्त भरताद्यार्ति नाशन । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

द्रोणाचलसमुत्क्षेप समुत्क्षिप्तारि वैभव । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

सीताशीर्वाद सम्पन्न समस्ताभयवांक्षित । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

वातपित्त कफ श्वास ज्वारादि ब्याधिनाशन । लोल-लाङ्गूल पातेन ममारातीन्निपातय ।

अथ फलश्रुतिः ॥

अब फल कहते हैं।

ॐ इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टं शत्रुञ्जयं नाम पठेत्स्तवं यः ।
स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात् ॥

(इति श्री आद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचिते हनुमत्पाचांगे लांगूलास्त्र शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोगम् समाप्तम् ॥)



◆ षष्ठ पाठ ◆

हनुमत्सहस्त्रनाम स्तोत्रम्

अथ श्री हनुमत्सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

अब हनुमान जी हजार नाम वाला स्तोत्र कहता हूँ।

उक्तं च ब्रह्माण्ड पुराणे ॥

यह पाठ ब्रह्मोण्ड पुराण में कहा गया है।

ऋषय ऊचुः ॥

ऋषियों ने कहा।

ऋषे लोहगिरिं प्राप्तः सीता विरह कातरः ॥
भगवन किं विधाद् रामस्तत्सर्वं ब्रूहि सत्त्वरम् ॥ १ ॥

हे भगवन ! सीता जी की विरह से कातर होकर भगवान राम किस प्रकार से ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचे थे। यह वृतान्त बतायें।

बाल्मीकिरुवाच ॥

बाल्मीकि ने कहा।

माया मानुष देहोऽयं ददर्शाऽग्रे कपीश्वरम् ॥
हनुमन्तम जगत्स्वामी बालाऽर्क सम तेजसम् ॥ २ ॥

प्रातः के सूर्योदय के समान तेजस्वी कपीश्वर श्री हनुमान जी के समक्ष जगत के स्वामी ने अपनी माया से मनुष्य देह में दर्शन दिया।

स सत्त्वरं समागम्य साष्टांग प्रणिपत्य च ॥
कृताञ्जलि पुटो भूत्वा हनुमान रामम ब्रवीत् ॥ ३ ॥

उन्हें साक्षात् पाकर उन्होंने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। तदुपरान्त हाथ जोड़कर उन्होंने श्री रामचन्द्र जी से कहा।

हनुमान वाचः ॥

श्री हनुमान जी ने कहा।

धन्योऽस्मि कृत कृत्योऽस्मि दृष्टवा तत्पाद पंकजम ॥
योगनामप्य गम्यं च संसार भय नाशनम् ॥ ४ ॥

मैं धन्य हुआ। मैं कृत कृत्य हुआ, प्रभु आपके चरण कमलों के दर्शन पाकर। संसार के भय का नाश करने वाले आपके यह दर्शन योगियों के लिये भी अगम्य हैं।

पुरुषोत्तम! देवेश! कर्तव्य तन्निवैद्यताम् ॥ ५ ॥

हे देवेशे! हे पुरुषोत्तम! अब मुझे क्या करना चाहिये।

श्री राम उवाचः ॥

श्री भगवान राम ने कहा।

जन स्थानं कपिश्रेष्ठ! कोऽप्यागत्य विदेहजाम् ।
हतवान् विप्र संवेशी मारीचानुगते मपि ॥ ६ ॥

हे कपि श्रेष्ठ! कोई आकर विदेही सीता का अपहरण करके ले गया। उस समय मारीच माया से मृग बनकर जा रहा था और मैं उसके पीछे था। उसी समय कोई विप्र बनकर आया था।

गवेष्य साम्प्रतं वीर! जानकी हरणेवर ।
त्वया गम्यो न को देशस्त्वं च ज्ञानवतां वरहः ।
सप्तकोटि महामन्त्र मन्त्रितावयवः प्रभुः ॥ ६ ॥

अतएव हे वीर! जिसने जानकी का हरण किया है, उसकी शीघ्रता से खोज करो क्योंकि ज्ञानियों में आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं। सात करोड़ महामन्त्रों

से अभिमन्त्रित शरीर वाले आप ही हैं। इसी कारण आपके लिए कोई भी देश अगम्य नहीं है।

ऋषय ऊचुः ॥

ऋषियों ने कहा।

को मन्त्रः किंच तद्ध्यानं तन्नो ब्रूहि यथार्थतः ॥
कथा सुधा रसं पीत्वा न तृप्यामः परन्तप ! ॥ ८ ॥

हे परम तपस्वी ! वह कौन सा मन्त्र है ? वह कौन सा ध्यान है ? कृपया वह हमें बतायें क्योंकि कथा का सुधा रस तो पान किया है परन्तु तृप्ति प्राप्त नहीं हुई है।

बाल्मीकि रुवाच ॥

बाल्मीकि ने कहा।

मन्त्रं हनुमतो विद्धि भुक्ति मुक्ति प्रदायकम् ॥
महारिष्ट महापाप महादुःख निवारणम् ॥ ९ ॥

हनुमान जी का मन्त्र भुक्ति-मुक्ति प्रदान करता है। यह महारिष्ट, महापाप तथा महादुःख का भी निवारण करता।

अथ हनुमत्मन्त्रः ॥

अब हनुमान जी का मन्त्र कहता हूँ।

"ऊँ हैं ह्रीं हनुमते रामदूताय लङ्का विध्वंसनाय अंजनि गर्भ सम्भूताय शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय किलि किलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद् देवाय ऊँ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा ॥"

अन्यं हनुमतो मन्त्रं सहस्त्रनाम संज्ञितम् ॥

जानन्ति ऋषयः सर्वे महादुरित नाशनम् ॥ १० ॥

अन्य हनुमान जी का मन्त्र सहस्त्र नाम की संज्ञा वाला है। इसे ऋषि गण जानते ही हैं जो कि समस्त व्याधियों का नाश करता है।

यस्य संस्मरणात् सीता लब्धा राज्यम कण्टकम् ॥
विभीषणाय च ददावात्मानं लब्धवान मया ॥ ११ ॥

इसके स्मरण मात्र से मैंने सीता प्राप्त की थी एवं विभीषण को राज्य दिया था जो कि निष्कंटक हो गया था।

ऋषय ऊचुः ॥

ऋषियों ने कहा।

सहस्त्राम सन्मन्त्रं दुःखाद्यौद्य निवारणम् ॥
बाल्मीके ! ब्रूहि नस्तूर्णं शुश्रूषामः कथां पराम् ॥ १२ ॥

हे बाल्मीकि जी ! वह सहस्त्राम जो कि मन्त्र रूपी है और जो कि दुःख व आधि-व्याधि का नाश करता है, कृपा करके हमें बतायें।

बाल्मीकि रुवाच ॥

बाल्मीकि ने कहा।

श्रण्वन्तु ऋषयः सर्वे सहस्त्र नामकं स्तवम् ॥
स्तवानामुत्तमं दिव्यं सदर्थस्य प्रदायकम् ॥ १३ ॥

हे ऋषियों ! श्रवण करें कि सर्व स्तवमों में से यह सहस्त्राम उत्तम व दिव्य है जो कि समस्त कामनाओं का पूरक है।

अथ विनियोगः ॥

अब विनियोग कहता हूँ।

"ॐ अस्य श्री हनुमत्सहस्त्रनाम स्तोत्र, मन्त्रस्य श्री

रामचन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री हनुमान महारुद्रो देवता, ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजम्, श्रीं इति शक्तिः, किलि किलि बुबुकारेणेति कीलकम्, लंका विध्वंसनाय कवचम्, मम सर्वोपद्रव शान्त्यर्थे सर्व कामान सिद्धियर्थे जपे। पाठे विनियोगः ।।"

अथ करन्यासः ।।

अब करन्यास कहतां हूँ।

ऊँ ऐं हनुमते रामदूताय अंगुष्ठाभ्यां नमः ।।

ऊँ लंका विध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः ।।

ऊँ अंजनि गर्भ सम्भूताय मध्यमाभ्यां नमः ।।

ऊँ शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः ।।

ऊँ किलि किलि बुबुकारेण विभिषणाय हनुमद् देवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।

ऊँ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।।

अथ हृदय न्यासः ।।

अब हृदय न्यास कहता हूँ।

ऊँ ऐं हनुमते रामदूताय हृदयाम नमः ।।

ऊँ लंका विध्वंसनाय शिर से स्वाहा ।।

ऊँ अंजनि गर्भ सम्भूताय शिखायैं वषट् ।।

ऊँ शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय कवचाय हुम् ॥
ऊँ किलि किलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद् देवाय नेत्र त्रयाय वौषट् ॥
ऊँ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥

अथ ध्यानम् ॥

अब ध्यान कहता हूँ।

प्रतप्तस्वर्ण-वर्णाभ संरक्तारुणलोचनम् ।
सुग्रीववादियुतं ध्यायेत् पीताम्बरसमावृतम् ॥
गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम् ।
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालङ्कारभूषितम् ॥ १४ ॥

तपित स्वर्ण के समान देदीप्यमान हैं। इनके नेत्र रक्त की भाँति लाल हैं। इन्होंने पीताम्बर पहना हुआ है। इन्होंने समुद्र का उल्लंघन किया था। माथे पर पूँछ लपेटे हुए हैं। विभिन्न अलंकारों से सज्जित व ज्ञान मुद्रा से अभय प्रदान करते सुग्रीवादि से घिरे हुए श्री हनुमान जी हैं।

श्री रामचन्द्र उवाच ॥

श्री रामचन्द्र ने कहा।

ऊँ हनुमान् श्रीपदो वायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः ।
अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः ॥
धनदो निर्गुणः कायो वीरो निधिपतिर्मुनिः ।
पिङ्गाक्षो वरदो वाग्मी सीताशोकविनाशनः ॥

शिवः सर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताऽव्यक्तो रसाधरः ।
पिङ्गेमः पिङ्गकेशः श्रुतिगम्यः सनातनः ॥
अनादिर्भगवान् देवो विश्वहेतुर्निरामयः ।
आरोग्यकर्ता विश्वेशो विश्वनाथो हरिश्वरः ॥
भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः ।
विश्वम्भरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वदः ॥
विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वहरो रविः ।
विश्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः ॥
प्लवङ्गमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो विद्यावनेचरः ।
बालो वृद्धो युवा तत्त्वं तत्त्वगम्यः सखा-ह्यजः ॥
अञ्जनी-सूनुरव्यग्रो ग्रामख्यातो धराधरः ।
भूर्भुवः स्वर्महर्लोके जनलोकस्तपोऽव्ययः ॥
सत्यमोङ्कारगम्यश्च प्रणयो व्यापकोऽमलः ।
शिवधर्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फाल्गुनप्रियः ॥
गोष्पदीकृत - वारीशः पूर्णकामो धरापतिः ।
रक्षोघ्नः पुण्डरीकाक्षः शरणागत - वत्सलः ॥
जानकीप्राणदाता च रक्षःप्राणापहारकः ।
पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकर - समप्रभः ॥
देवोद्यान - विहारी च देवताभयभञ्जनः ।
भक्तोदयो भक्तलब्धो भक्तपालनतत्परः ॥

द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ।
रक्षोघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीवहारकः ॥
बुबुकार - हतारातिगर्वपर्वत मर्दनः ।
हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वभर्ता जगद्गुरुः ॥
जगन्नेता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः ।
जगद्धितो हरिः श्रीशो गरुडस्मयभञ्जनः ॥
पार्थध्वजो वायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितप्रभः ।
ब्रह्मपुच्छः परंब्रह्म-पुच्छो रामेष्ट एव च ॥
सुग्रीवादियुतो ज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ।
कल्पस्थायी चिरञ्जीवी प्रसन्नश्च सदाशिवः ॥
सन्नतः संगतिर्भुक्ति - मुक्तिदः कीर्तिनायकः ।
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीपदः शिवः ॥
भक्तोदयो भक्तगम्यो भक्तभाग्यप्रदायकः ।
उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशकः ॥
बालिबन्धनकृद्विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ।
लङ्कारिः कालपुरुषो लङ्केशगृहभञ्जनः ॥
भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ।
श्रीरामरूपः कृष्णस्तु लङ्काप्रासादभञ्जकः ॥
कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो विश्वपावनः ।
विश्वभोक्ताऽथ मारिघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥

ऊर्द्ध्वगो लाङ्गली माली लाङ्गूलाहतराक्षसः ।
समीरतनुजो वीरो वीरमारो जयप्रदः ॥
जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥
पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिः जगत्पावनपावनः ।
देवेशो जितमारोऽथ रामभक्तिविधायकः ॥
ध्याता ध्येयो भगः साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ।
ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणसमीरणः ॥
विभीषणप्रियः शूरः पिप्लयायनसिद्धिदः ।
सिद्धिः सिद्धाश्रयः कालः कालभक्षकभञ्जनः ॥
लङ्केशनिधनस्थायी लङ्कादाहक ईश्वरः ।
चन्द्र-सूर्या-ऽग्नि-नेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ॥
कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ।
सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ॥
लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ।
रामध्येयो हृषीकेशो विष्णुभक्तो जटी बलिः ॥
देवारिदर्पहा होता धाता कर्त्ता जगत्प्रभुः ।
नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरन्तरः ॥
निरञ्जनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयङ्करः ॥
जानकीघनशोकोत्थ - तापहर्ता परात्परः ।
वाङ्मयः सदसद्रूपकारणं प्रकृतेः परः ॥

भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलङ्काविदाहकः ।
पुच्छबद्धयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ॥
छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः ।
प्लवङ्गमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ॥
सौम्यो गुरुः काव्यकर्ता भक्तानां च वरप्रदः ।
भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥
क्रोधहर्ता तापहर्ता भक्तानामभयप्रदः ।
अग्निर्विभावसुर्भानुर्युमो निऋतिरेव च ॥
वरुणो वायुगतिमान् वायुः कूबेर ईश्वरः ।
रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः ॥
राहुः केतुर्मरुद्धाता धर्ता हर्ता समीरजः ।
मशकीकृत - देवारि - दैत्यारि र्मधुसूदनः ॥
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवनः ।
भागीरथीपदाम्भोजः सेतबन्धविशारदः ॥
स्वाहा स्वधा हविः काव्य-हव्यवाह-प्रकाशकः ।
स्वप्रकाशो महावीरो लघुरमितविक्रमः ॥
भञ्जनो दानगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः ।
जगदात्मा जगद्-योन्निर्जगदन्तो ह्यनन्तकः ॥
विपाप्मा निष्कलङ्कोऽय महात्मा हृदयङ्कृतिः ।
खं वायुः पृथ्वीरापो बहिर्दिक्पाल एव च ॥

क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ता च पल्वलीकृतसागरः ।
हिरण्मयः पुराणश्च खेचरो भूचरो मनुः ॥
हिरण्यगर्भः सूत्रात्मा राजराजो विशाम्पतिः ॥
वेदान्तवेद्य उद्गीथ्यो वेद - वेदाङ्गपारगः ॥
प्रतिग्रामस्थितिः सद्यः स्फूर्तिदाता गुणाकरः ।
नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ॥
चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारो ह्यनुत्तमः ।
पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्मान शर्करीपतिः ॥
किलिकिलाराव सन्त्रस्त भूत-प्रेत-पिशाचकः ।
ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थलः सर्वगतिः पुमान् ॥
अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनुः ।
स्वर्गद्वार प्रजाद्वार मोक्षद्वारपतीश्वरः ॥
नादरूपः परंब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः ।
एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयंज्योतिरनाकुलः ॥
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसस्तमः ।
तमोहर्ता निरालम्बो निराहारो गुणाकरः ॥
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कर्मा बृहद्यशाः ।
बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः ॥
बृहत्कायो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ।
बृहद्यत्नो बृहत्कामो बृहत्पुच्छो बृहत्करः ॥

बृहन्नतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ।
बृहच्छाक्त - बृहद्वाञ्छाफलदो बृहदीश्वरः ॥
बृहल्लोकनुतो द्रष्टा विद्यादाता जगद्गुरुः ।
देवाचार्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः ॥
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ।
उत्तराशास्थितः श्रीदो दिव्यौषधिवशः खगः ॥
शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणः प्राणचञ्चुरः ।
चतुरो ब्राह्मणो योगी योगगम्यः परावरः ॥
अनादिनिद्रो व्यासो वैकुण्ठः पृथिवीपतिः ।
अपराजितो जितारातिः सदानन्दो गिरीशजः ॥
गोपालो गोपतिर्योद्धा कलिकालः परात्परः ।
मनोवेगी सदायोगी संसार - भयनाशनः ॥
तत्त्वदाताऽथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः ।
शुद्धो बुद्धो नित्ययुक्तो भक्तराजो जगद्रथः ॥
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ।
मायाभर्जितरक्षाश्च मायानिर्मितविष्टपः ॥
मायाश्रयश्च निर्लेपो मायानिर्वर्तकः सुखम् ।
सुखी सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः ॥
महेश्वरः सत्यसन्धः शरभः कलिपावनः ।
रसो रसज्ञः सन्मानो रूपं चक्षुः स्तुतिः खगः ॥

घ्राणो गन्धः स्पर्शनं च स्पर्शोऽहङ्कारामानगः ।
नेति - नेतीतिगम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ॥
गिरीशो गिरजाकान्तो दुर्वासाः कविरङ्गिराः ।
भृगु - र्वसिष्ठश्च्यवनो नारदम्तुम्बरो बलः ॥
विश्वक्षेत्रं विश्वबीजं विश्वनेत्रं च विश्वपः ।
याजको यजमानश्च पावकः पितरस्तथा ॥
श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तन्त्रो मन्त्री मन्त्रपिता सुरः ।
राजेन्द्रो भूपती रुण्डमाली संसारसारथिः ॥
नित्यः सम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ।
गणपः केशवो भ्राता पितामाऽथ मारुतिः ॥
सहस्त्रमूर्द्धा सहस्त्रास्यः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
कामजित् कामदहनः कामी कामफलप्रदः ॥
मुद्रापहारि रक्षोघ्नः क्षितिभारहरो बलः ।
नखदंष्ट्रायुधो विष्णुर्भक्ताभयवरप्रदः ॥
दर्पहा दर्पहो द्रष्टा शतमूर्तिरमूर्तिमान् ।
महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः ॥
महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः ।
महाकर्मो महानादो महामन्त्रो महामतिः ॥
महागमो महोदारो महादेवात्मको विभुः ।
रुद्रकर्मा क्रूरकर्मा रत्ननाभः कृतागमः ॥

अम्भोधिलङ्घनः सिंहः सत्यधर्मा प्रमोदनः ।
जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुवाहनः ॥
जीवो धाता सहस्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः ।
सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्ध-सङ्कल्पः सिद्धिहेतुकः ॥
सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणवन्दितः ।
सप्ताब्धिलङ्घनो वीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेवितः ।
सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोतृस्वराश्रयः ॥
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तछन्दः सप्तजनाश्रयः ।
सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ॥
मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ।
पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ॥
नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ।
नवनारायणस्तुत्यो नवनाथमहेश्वरः ॥
मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्विष्णुसारथिः ।
बहुयोजन - विस्तीर्ण पुच्छदुष्टहतासुरः ॥
दुष्टग्रहनिहन्ता च पिशाचग्रहघातकः ।
बालग्रह - विनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ॥

उग्रकृत्य उग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ।
शतमन्युस्तुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ॥
समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशनः ।
रक्षोऽग्निदाहो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ॥
मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टि - निवारकः ।
मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ॥
सुमीरतनयो योद्धा तत्त्वविद्याविशारदः ।
अमोघोऽमोघदृष्टिश्च दिष्टदोऽरिष्टनाशनः ॥
अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ।
अर्थो धन्यो सुराराति: पुण्डरीकाक्ष आत्मभूः ॥
सङ्कर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ।
प्रचलोद्धारको नित्यः सेतुकद् - रामसारथिः ॥
आनन्दः परमान्दो मत्स्यः कूर्मो निधीश्वरः ।
वाराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ॥
रामः कृष्णः शिवो वृद्धः कल्की रामश्च मोहनः ।
भृङ्गी नङ्गी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ॥
कर्माध्यक्षः सुरारामो विश्रामो जगतीपतिः ।
जगन्नाथः कपीश्च सर्वावासः सदाश्रयः ॥
सुग्रीवादिस्तुतो दान्तः सर्वकर्मप्लवङ्गमः ।
नखदारितक्षाश्च नखयुद्ध - विशारदः ॥

कुशलः सघनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ।
स्वर्णवर्णो बालढ्यश्च पुरजेता वनाशनः ॥
कैवल्यदीपः कैवल्यो गरुडः पन्नगो गुरुः ।
क्लि - प्लीराव - हताराति - बार्बपर्वत - भेदनः ॥
वज्राङ्गो वज्रवज्रश्च भक्तवज्र - निवारकः ।
नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ॥
प्रौढप्रतापस्तपनो भक्ततापनिवारकः ।
शरण जीवनं भोक्ता नानाचेष्टोऽथ चऽचलः ॥
स्वस्थः स्वस्थस्थहा दुःखशातनः पवनात्मजः ।
पावनः पवनः कान्तो भक्तागः सहनो बली ॥
मेघनादरिपु - मेघनाद संहृतराक्षसः ।
क्षरोऽक्षरो विनीतात्मा वानरेशः सताङ्गतिः ॥
श्रीकण्ठः शितकण्ठश्च सहायो सहनायकः ।
अस्थूलस्त्वंनणुर्भर्गो दिव्यः संसृतिनाशनः ॥
अध्यात्मविद्यासारश्च अध्यात्मकुशलः सुधीः ।
अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ॥
सत्यगर्भः सत्यरूपः सत्यः सत्यपराक्रमः ।
अञ्जनीप्राणलिङ्गश्च वायुवंशोद्वहः सृतिः ॥
भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरूपश्चित्ररूपधृक् ।
मैनाकवन्दितः सूक्ष्मदशनो विजयोऽजयः ॥

क्रान्तदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटीकृतविक्रमः ।
कम्बुकण्ठः प्रसन्नात्मा दुःखनाशो वृकोदरः ॥
लम्बोष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविदां वरः ।
विपश्चित् कविरान्द - विग्रहोऽनल्पशासनः ॥
फाल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ।
योगविद्योगकर्ता च योगयोर्निगम्बरः ॥
अकारादि - हकारान्त - वर्णनिर्मितविग्रहः ।
उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः प्रमयेश्वरः ॥
श्लिष्टजंघः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ।
सुशर्माऽमितशर्मा च नारायणपरायणः ॥
विष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थास्नुरेव च ।
हरि - रुद्राऽनुकृद्वक्ष - कम्पनो भूमिकम्पनः ॥
गुणप्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागः स्तुतिप्रियः ।
नागकन्या - भयध्वंसी ऋतुपर्णः कपालभृत् ॥
अनाकुलो भगोऽपापो भगवान् वेदपारगः ।
अक्षरः पुरुषो लोकनाथो ऋक्षप्रभुर्दृढः ॥
अष्टाङ्गयोग - फलभूः सत्यसन्धः पुरुष्टुतः ।
श्मशानस्थान - निलयः प्रेतविद्रावणश्रमः ॥
पञ्चाक्षरपरः पञ्चमातृको रञ्जनध्वजः ।
योगिनीवृन्द - वन्धश्रीः शत्रुघ्नोऽनन्तविक्रमः ॥

ब्रह्मचारी - न्द्रियरिपु - र्धृतदण्डो दशात्मकः ।
अप्रपञ्चः सदाकारः शूरसेनाविदारकः ॥
वृद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तजिह्वापतिर्धरः ।
नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायकः ॥
षट्चक्रधामः स्वर्लोक - भयहन्मानदो मदः ।
सर्वश्यकरः शक्तिरनन्तोऽनन्तमङ्गलः ॥
अष्टमूर्तिर्नयोपेतो विरूपः सुरसुन्दरः ।
धूम्रकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महीधरः ॥
नन्दिप्रियः स्वतन्त्रश्च मेखली डमरुप्रियः ।
लोहाङ्ग सर्वविद्धन्वी षङ्गलः सर्व ईश्वरः ॥
फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ।
धर्माध्यक्षो धर्मफलो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ॥
पञ्चविंशति - तत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्मतत्परः ।
त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुष्टनिबर्हणः ॥
ऊर्जस्वान्निष्कलः शूली मौलिर्गर्जो निशाचरः ।
रक्ताम्बरधरो रक्तो रक्तमाला - विभूषणः ॥
वनमाली शुभाङ्गश्च श्वेतः श्वेताम्बरो युवा ।
जयोऽजयः परीवारः सहस्रवदनः कपिः ॥
शाकिनी - डाकिनी - यक्ष - रक्षो - भूतप्रभञ्जकः ।
सद्योजातः कामगति-र्ज्ञानमूर्ति-र्यशस्करः ॥

शम्भूतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवङ्गमः ।
चतुर्नवति - मन्त्रज्ञः पौलस्त्य - बलदर्पहा ॥
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानङ्गद - प्रियदर्पनुत् ।
स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ॥
उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितरुद्रश्च कामधुक् ॥

अथ फल श्रुति ॥

अब कवच पाठ से प्राप्त होने वाले फल कहते हैं।

बाल्मीकिरूवाच ॥

बाल्मीकि ने कहा।

इति नाम्नां सहस्रेण स्तुतो रामेण वायुभूः ॥

श्री राम ने सहस्त्रनाम से अन्त में वायु पुत्र की स्तुति की थी।

उवाच तं प्रसन्नात्मा सन्ध्यायाऽऽत्मानमव्ययम् ॥

तदुपरान्त हनुमान जी ने श्री रामचन्द्र को प्रसन्न हृदय जानकर कहा।

हनुमान उवाच ॥

हनुमान ने कहा।

ध्मानास्पदमिदं ब्रह्म मत्पुरः समुपस्थितम् ॥

एक मेरे ध्यान से आप मेरे सम्मुख उपस्थित हुए हैं।

स्वामिन् ! कृपानिधे ! राम ! ज्ञातोऽसिकपिनामया ।
त्वद्ध्याननिरता लोकाः किं मां जपसि सादरम् ॥

हे स्वामी ! हे कृपा के सागर ! हे श्री राम ! मैं वानर हूँ परन्तु मैंने आपको पहचान लिया है। सृष्टि में प्राणी आपके ध्यान में लगे रहते हैं और

आप मेरी स्तुति क्यों कर रहे हैं ?

त्वागमनहेतुश्च ज्ञातो ह्यत्र मयाऽनघ ! ।
कर्तव्यं मम ! किं राम ! तथा ब्रूहि च राघव ! ॥

हे राघव ! आपका यहाँ आने का उद्देश्य में समझ गया हूँ । आप मुझे निःसंकोच आज्ञा दे सकते हैं कि मैं क्या करूँ ?

इति प्रचोदितो रामः प्रहृष्टात्मेदमब्रवीत् ॥

उनके यह वाक्य सुनकर श्री राम ने कहा ।

श्री राम उवाच ॥

श्री राम ने कहा ।

दुर्जयः खलु वैदेहीं गृहीत्वा कोऽपि निर्गतः ॥

एक दुर्जय खलु ने वैदेही का अपहरण कर लिया है ।

हत्वा तं निर्घृणं वीर ! आनयस्व कपीश्वर ! ।
मम दास्यं कुरु सखे ! भव विश्वसुखङ्करः ॥

हे कपीश्वर ! मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि उस दुर्जन को मार कर मेरे पास ले आओ और मेरा दास बनाओ । तुम विश्व सुखकारी हो ।

तथा कृते त्वया वीर ! मम कार्यं भविष्यति ।
ओमित्यांज्ञा तु शिरसा गृहीत्वा स कपीश्वरः ॥

तथा हे वीर ! आपके ही करने से भविष्य में मेरा यह कार्य सम्पन्न होगा । इसके बाद कपीश्वर ने सिर झुकाकर आज्ञा स्वीकार कर ली ।

विधेयं विधिवत्तत्र चकार स शिवः स्वयम् ।
इदं नाम्नां सहस्रं तु योऽधीते प्रत्यहं नरः ॥

इस सहस्त्रनाम का जो नर पाठ करता है।

दुःखौघो नश्यते तस्य सम्पत्तिर्वर्धते चिरम् ।
वश्यं चर्तुर्विधं तस्य भवत्येव न संशयः ॥

उसके दुःखों का अन्त हो जाता है। उसकी सम्पत्ति चिरस्थायी रहती है। धर्म, अर्थ, भोग, मोक्ष उसे प्राप्त होते हैं।

राजानो राजपुत्राश्च राजकार्याश्च मन्त्रिणः ।
त्रिकालपठनादस्य दृश्यान्ते च त्रिपक्षतः ॥

राजा, राजा का पुत्र, राज्य कार्य करने वाले मंत्रीगण तीनो संध्याओं में डेढ़ मास तक पाठ करने से साधक के अधीन हो जाते हैं।

अश्वत्थमूले जपतां नास्ति वैरिकृतं भयम् ।
त्रिकालपठनात्तस्य सिद्धिः स्यात् करसंस्थिता ॥

अश्वत्थ अर्थात् पीपल की जड़ पर बैठकर जपने से शत्रुओं से भय नहीं रहता है। त्रिकालों में पाठ करने से समस्त सिद्धियाँ हस्तगत होती हैं।

ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्थाय प्रत्यहं यः पठेन्नरः ।
ऐहिकाऽऽमुष्मिकं सोऽपि लभते नाऽत्र संशयः ॥

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर जो इसका पाठ करता है। निःसन्देह इहलोक व परलोक में सुख लाभ होते हैं।

संग्रामे सन्निविष्टानां वैरिविद्रावणं परया ।
ज्वरा - ऽपस्मार - शमनं गुल्मादीनां निवारणम् ॥

युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं का नष्ट कर पाता है। ज्वर, अपस्मार, गुल्म आदि रोगों का निवारण होता है।

साम्राज्य - सुखसम्पत्तिदायकं जपतां नृणाम् ।

स्वर्ग मोक्षं समाप्नोति रामचन्द्रप्रसादकः ॥

इसे पढ़ने वाले को साम्राज्य सुख, सम्पत्ति सुखादि प्राप्त होते हैं। श्री रामचन्द्र जी स्वर्ग व मोक्षादि प्रदान करते हैं।

य इदं पठते नित्यं श्रावयेद् वा समाहितः।
सर्वान् कामानवाप्नोति वायुपुत्रप्रसादतः ॥

इस स्तोत्र का प्रतिदिन जो पाठ करता है या ध्यान से सुनता है वायु पुत्र श्री हनुमान जी उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण करते हैं।

(इति आद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचिते हनुमत्पांचागे ब्रह्माण्ड पुरोक्त उत्तर खण्डे श्री राम कृत्त हनुमान सहस्त्रनाम आयभा भाषा टीका सहिते सम्पूर्णम् ॥)



◆ सप्तम् पाठ ◆

हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन सरोज, निज मनु मुकुर सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जयकपीस तिहुँलोक उजागर ।
रामदूत अतुलित बल धामा, अञ्जनि पुत्र पवनसुत नामा ।
महाबीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ।
कंचन वरन विराज सुवेसा, कानन कुंडल कुंचित केसा ।
हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै, कांधे मूँज जनेऊ साजै ।
शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग वन्दन ।
विद्यावान गुनी अति चातुर, रामकाज करिबे को आतुर ।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, रामलषन सीता मन बसिया ।
सूक्ष्मरूप धरि सियहिं देखावा, बिकट रूप धरि लंक जरावा ।
भीम रूप धरि असुर सँहारे, रामचन्द्र के काज सँवारे ।
लाय सजीवन लषन जियाये, श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहि समभाई ।
सहस बदन तुम्हरो यश गावै । अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा ।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कवि कोविद कहि सके कहा ते ।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा ।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषनु माना, लंकेश्वर भय सब जग जाना ।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू, लील्यों ताहि मधुर फल जानू ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिन पैसारे ।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डर ना ।
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनो लोक हाँक ते काँपै ।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै, महाबीर जब नाम सुनावै ।
नासै रोग हरे सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।
संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बजन ध्यान जो लावैं ।
सब पर राम तस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा ।
और मनोरथ जो कोई लावै, सोइ अमित जीवन फल पावै ।
चारों जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा ।
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकन्दन राम दुलारे ।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस वर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ।
तुम्हरे भजन राम को भावै, जनम जनम के दुख बिसरावै ।
अंतकाल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।
और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेइ सर्व सुख करई ।
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बल बीरा ।

जै जै जै हनुमान गोसाई, कृपा करहु गुरुदेव की नाई ।
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहिं बन्दि महासुख होई ।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्ध साखी गौरीसा ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय महं डेरा ।

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
रामलखन सीता सहित, हृदय बसहु सुरभूप ॥

॥ इति हनुमान चालीसा समाप्त ॥



◆ अष्टम पाठ ◆

संकट मोचन

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

बाल समय रवि भक्ष लियो, तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संङ्कट काहु सो जात न टारो ।
देवन आनि करी विनती तब, छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नाहिं जानत है जग में, कपि संङ्कट मोचन नाम तिहारो ।
बालि की त्रास कपीस बसै, गिरि जात महा प्रभु पंथ निहारो ।
चौकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन विचार विचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तु दास के सोक निवारो ।
अंगद के संङ्ग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हमसों जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्राण उबारो ।
रावनत्रास दई सियको, सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय अशोक सो आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुखेन समेत, तबै गिरि द्रोन सुबीर उपारो ।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लक्षिमन के तुम प्रान उबारो ।
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग की फाँस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, माँहि भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो ।

बन्धु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देविहि पूजि भली विधि सौं, बलि देऊँ सबै मिलि मन्त्र विचारो।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो ।
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महा प्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कुछ संकट होय हमारो ।

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानवदलन, जय जय जय कपिसूर ॥

॥ इति संङ्कट मोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्णम् ॥

संङ्कट मोचन स्तोत्रम्

काहे बिलम्ब करो अञ्जनी-सुत सङ्कट बेगि में होहु सहाई ।
नहिं जप जोग न ध्यान करो तुम्हरे पद पङ्कज में सिर नाई ।
खेलत खात अचेत फिरौं ममता मद लोभ रहे तन छाई ।
हेरत पन्थ रहो निसि वासर कारन कौन विलम्ब लगाई ।
काहे बिलम्ब करो अञ्जनी सुत सङ्कट बेगि में होहु सहाई ।
जो अब आरत होइ पुकारत राखि लेहु यम फाँस बचाई ।
रावन गर्व हने दस मस्तक घेरि लंगूर की कोट बनाई ।
निशिचर मारि विध्वंस किये घृत लाइ लंगूर में लंक जराई ।
जाइ पताल हने अहिरावण, देविहिं टारि पाताल पठाई ।
वै भुज काह भये हनुमन्त लियो जिहि ते सब सन्त बचाई ।

औगुन मोर क्षमा करु साहिब जानिपरी भुज की प्रभुताई ।
भवन अधार बिना घृत दीपक टूटि परो यम त्रास दिखाई ।
काहि पुकार करो यहि औसर भूलि गई जिय की चतुराई ।
गाढ़ परे सुख देत तुहीं प्रभु रोषित देखि के जात डेराई ।
छाड़े हैं माता पिता परिवार पराई गही शरणागत आई ।
जन्म अकारथ जात चले हनुमान बिना नहिं कोउ सहाई ।
मझधारहिं मम बेड़ी अड़ी भवसागर पार लगाओ गोसाईं ।
पूज कोऊ कृत काशी गयो मह कोऊ रहे सुर ध्यान लगाई ।
जानत शेष महेश गणेश सुदेश सदा तुम्हरे गुन गाई ।
और अवलम्ब न आस छुटै सब त्रास छुटे हरिभक्ति दृढ़ाई ।
सन्तन के दुख देखि सहैं नहिं जान परि बड़ी वार लगाई ।
एक अचंभो लखो हिय में कछु कौतुक देखि रहो नहिं जाई ।
कहुँ ताल मृदंङ्ग बजावत गावतजात महादुख बेगि नसाई ।
मूरित एक अनूप सुहावन का बरणो वह सुन्दरताई ।
कुञ्चित केश कपोल बिराजत कौन कली बिच भौंर लुभाई ।
गरजै घनघोर घमण्ड घटा बरसै जल अमृत देखि सोहाई ।
केतिक क्रूर बसे नभ सूरज सूरसती रहे ध्यान लगाई ।
भूपन भौन विचित्र सोहावन गैर बिना बर बेनु बजाई ।
किंकिन शब्द सुनै जग मोहित हीरा जड़े बहु झालर लाई ।
सन्तन के दुख देखि सको नहिं जान परि बड़ी बार लगाई ।
सन्त समाज सबै जपते सुरलोक चले प्रभु के गुण गाई ।
केतिक क्रूर बसे जग में भगवन्त बिना नहिं कोऊ सहाई ।
नहिं कछु वेद पढ़ो नहिं ध्यान धरो बनमाहिं इकन्तहि जाई ।

केवल कृष्ण भज्यो अभिअन्तर धन्य गुरू जिन पन्थ दिखाई ।
स्वारथ जन्म भये तिनके जिन्हको हनुमन्त लियो अपनाई ।
का बरणो करनी तरनी जल मध्य पड़ी धरि पार लगाई ।
जाहि जपै भव फन्द कटै अब पन्थ सोई तुम देहु दिखाई ।
हेरि हिये मन में गुनिये मन छूटि गयो जिय काह समाई ।
साँस चले पछितात सोई तन जात चले अनुमान बड़ाई ।
यह जीवन जन्म है थोड़े दिना मोहिं का करिहै यमत्रास दिखाई ।
काहि कहै कोऊ व्यवहार करै छलछिद्र में जन्म गवाँई ।
रे मन चोर तू सत्य कहा अब का करिहै यम त्रास दिखाई ।
जीव दया करु साधु की सङ्गत लेहि अमर पद लोक बड़ाई ।
रहा न औसर जात चले भजिले भगवन्त धनुर्धर राई ।
काहे बिलम्ब करो अञ्जनीसुत संङ्कट बेगि में होहु सहाई ।

(इति सङ्कट मोचन समाप्त ॥)



◆ नवम् पाठ ◆

बजरंग बाण

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करें सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी, सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।
जन के काज विलम्ब न कीजे, आतुर दौरि महा सुख दीजे।
जैसे कूदि सिन्धु महि पारा, सुरसा बदन पैठि विस्तारा।
आगे जाई लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुर लोका।
जाय बिभीषण को सुख दीन्हा, सीता निरखि परमपद लीन्हा।
बाग ऊजारि सिन्धु महँ बोरा, अति आतुर यम कातर तोरा।
अक्षय कुमार को मार संहारा, लूम लपेट लंक को जारा।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय ध्वनि सुरपुर में भई।
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी, कृपा करहु उर अन्तर्यामी।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आतुर होय दुख करहु निपाता।
जै गिरिधर जै जै सुख सागर, सुर समूह समरथ भट नागर।
ओं हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले, बैरिहिं मारु वज्र की कीले।
गदा बज्र लै बैरिहि मारो, महाराज प्रभु दास उचारो।
ऊँकार हँकार प्रभु धावो, बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो।
ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमान कपीशा, ओं हुँ हुँ हुँ हनु उर शीशा।
सत्य होहु हरि शपथ पाय के, राम दूत धरु मारू धाय के।

जय जय जय हनुमन्त अगाधा, दुःख पावत जन केहि अपराधा ।
पूजा जप तप नेम अचारा, नहीं जानत हों दास तुम्हारा ।
बन उपवन मग, गिरि गृह माँही, तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ।
पाँय परौं कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।
जय अन्जनि कुमार बलवन्ता, शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ।
बदन कराल काल कुल घातक, राम सहाय सदा प्रति पालक ।
भूत प्रेत पिशाच निशाचर, अग्नि बैताल काल मारी मर ।
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की, राखु नाथ मर्याद नाम की ।
जनक सुता हरि दास कहावो, ताकी शपथ विलम्ब न लावो ।
जै जै जै धुनि होत अकाशा, सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ।
चरण शरण कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई, पांय परौं कर जोरि मनाई ।
ओं चं चं चं चं चपल चलंता, ओं हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ।
ओं हँ हँ हांक देत कपि चंचल, ओं सं सं सहमि पराने खल दल ।
अपने जन को तुरत उबारो, सुमिरत होय आनन्द हमारो ।
यह बजरंग बाण जेहि मारे, ताहि कहो फिर कौन उबारे ।
पाठ करें बजरंग बाण की, हनुमत रक्षा करैं प्राण की ।
यह बजरंग बाण जो जापै, ताते भूत प्रेत सब कांपै ।
धूप देय अरु जपै हमेशा, ताके तन नहिं रहैं क्लेशा ।

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

◆ दशम पाठ ◆

हनुमान साठिका

॥ दोहा ॥

बीर बखानौं पवनसुत, जनत सकल जहान।
धन्य धन्य अंजनि-तनय, संकर, हर, हनुमान ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय हनुमान अखंडी, जय जय महाबीर बजरंगी ।
जय कपीस जय पवन-कुमारा, जय जग-बन्धन सील-अगारा ।
जय उद्योग अमर अविकारी, अरि-मरदन जय जय गिरधारी ।
अंजनि-उदर जन्म तुम लीना, जय-जयकार देवतन कीना ।
बाजे दुंदुभि गगन गंभीरा, सुर-मन हरष, असुर-मन पीरा ।
कपि के डर, गढ़ लंक सकाने, छूट बंदी देव, सब जाने ।
रिषय-समूह निकट चलि आये, पवन-तनय-के पद सिर नाये ।
बार-बार अस्तुति करि नाना, निरमल नाम धरा हनुमाना ।
सकल रिषय मिलि अस मत ठाना, दीन बताय लाल फल खाना ।
सुनत बचन कपि अति हरषाने, रबि-रथ गहे लाल फल जाने ।
रथ-समेत रबि कीन अहारा, सोर भयउ तहँ अति भयकारा ।
बिनु तमारि सुर-मुनि अकुलाने, तब कपीस-कै अस्तुति ठाने ।
सकल लोक वृतांत सुनावा, चतुरानन तब रबि ढंगिलावा ।
कहा बहोरि, सुनहु बल-सीला, रामचन्द्र करिहैं बहु लीला ।
तब तुम तिनकर करब सहाई, अबहिं रहहु कानन-महं जाई ।
अस कहिबिधि निज लोक सिधारा, मिले सखासग पवनकुमारा ।

खेलहिं खेल महातरु तोरी, गली करत परबत-मैं फोरी ।
जेहि गिरि चरन देत कपिराई, बल सो चमकि रसातल जाई ।
कपि सुग्रीव बालि-की त्रासा, निरभउ रहेउ राम मग-आसा ।
मिले राम लै पवन-कुमारा, अति आनन्द समीर-दुलारा ।
मनि मुंदरी रघुपति-सौं पाई, सीता खोज चले कपिराई ।
सत योजन जननिधि बिस्तारा, अगम अपार देव-मुनि हारा ।
बिन-श्रम गोखुर सरिस कपीसा, नांधि गयी कपि कहि जगदीसा ।
सीता चरन सीस तिन नायौ, अजर अमर की आशिष दायो ।
"अजर अमर गुन निधि सुत होहू । करहूँ बहुत रघुनायक छोहू ।"
रहे दनुज उपवन-रखवारी, एक-तें एक महा भट-भारी ।
तिन्हें मारि, उपवन, करि खीसा, दह्यो लंक कांप्यौ दससीसा ।
सिया बोध दे पुनि फिरि आयो, रामचन्द्र-के पद सिर नायो ।
मेरु बिसाल आनि पल मांही, बाँध्यौ सिंधु निमिष इक मांही ।
भये फन्नीस सक्ति-बस जबहीं, राम बिलाप कीन बहु तबहीं ।
भवन समेत सुखेनहिं लाये, भूरि सजीवनि कहं तब धाये ।
मग-महं कालनेमि कहं मारा, अमित सुभट निसिचर संहारा ।
आनि सजीवन सैल-समेता, धर दीन्ह्यौ जहं कृपानिकेता ।
फनपति केर सोक हरि लीन्हो, बरषि सुमन, सुर जयजय कीन्हो ।
अहिरावन हरि अनुज-समेता, लै गो जहाँ पाताल-निकेता ।
तहाँ रहै देवी अस्थाना, दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना ।
पवन-तनय तहं कीन्ह गोहारी, कटक-समेत निसाचर मारी ।
रिच्छ कीसपति जहां बहारी, राम-लखन कीन्हेउ यक ठौरी ।
सब देवन-कै बंदि छोड़ाई, सोई कीरति नारद मुनि गाई ।

अच्छ कुमार दनुज बलवाना, स्वामी केतु कहं सब जग जाना ।
कुम्भकर्ण रावन-कै भाई, ताहि निपात कीन्ह कपिराई ।
मेघनाथ संग्रामहिं मारा, पवन-तनय सम को बरियारा ।
मुरहा तनय नरांतक नामा, पल-महं ताहि हता हनुमाना ।
जहं लगि नाम दनुज कर पावा, संभु-तनय तहं मारि खसावा ।
जय मारुत-सुत जन अनुकूला, नाम कृसान सोक सम तूला ।
जेहिं जीवन-कहं संकट होई, रवि-समान तम-संकट खोई ।
बंदि परे सुमिरै हनुमाना, गदा-चक्र लै चलु बलवाना ।
जम-कहं मारि बाम दिसि दीन्हा, मृत्युहिं बांधि हाल बहु कीन्हा ।
सो भुजबल का कीन कृपाला, अछत तुम्हार मोरि यह हाला ।
आरति-हरन नाम हनुमाना, सारद-सुरपति कीन्ह बखाना ।
रहै न संकट एक रती-को, ध्यान धरैं हनुमान जती को ।
धावहु देखि दीनता मोरी, मेटहु बंदि, कहहुँ कर जोरी ।
कपिपति बेगि अनुग्रह करहु, आतुर आइ दास-दूख हरहू ।
राम-सपथ मैं तुमहिं धरावा, जो न गुहार लागि सिव-जावा ।
बिरद तुम्हारि सकल जग जाना, भव-भय-भंजन तुम हनुमाना ।
यंहि बंधन-करि के तिक बाता, नाम तुम्हार जगत-सुख-दाता ।
करहु कृपा जय जय जग-स्वामी, बार अनेक नमामि नमामी ।
भौम बार करि होम बिधाना, धूम-दीप-नैवेद्य सजाना ।
मंगल-दायक को लौ लावै, सुर नर मुनि तुरतहिं फल पावै ।
जयतिजयति जयजय जग स्वामी, समरथ सब जग अन्तरजामी ।
अंजनि-तनय नाम हनुमाना, सो तुलसी-कहं कृपानिधाना ।

॥ दोहा ॥

जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद जय हनुमान ।
राम-लखन-सीता-सहित, सदा करो कल्यान ॥
जो यह साठिक पढ़िइ नित, तुलसी कहैं बिचारि ।
पड़ै न संकट ताहि-कौ, साखी है त्रिपुरारि ॥

॥ सवैया ॥

आरत बन पुकारत हौं कपिनाथ सुनो बिनती मम भारी ।
अंगद औ नल-नील महाबलि देव सदा बल-की बलिहारी ॥
जाम्बवान् सुग्रीव पवन-सुत दिबिद मयंद महाभटभारी ।
दुख-दोष हरो तुलसी जन-को श्री द्वादश बीरन-की बलिहारी ॥



◆ एकादश पाठ ◆

हनुमद् बीसा

॥ दोहा ॥

राम भक्त विनेती करूँ, सुन लो मेरी बात ।
दया करो कुछ मेहर उपाओ, सिर पर रखो हाथ ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त, जय तेरा बीसा, कालनेमि को जैसे खींचा ।
करुणा पर दो कान हमारो, शत्रु हमारे तत्क्षण मारो ।
राम भक्त जय जय हनुमन्ता, लंका को थे किये विध्वंसा ।
सीता खोज खबर तुम लाए, अजर अमर के आशीष पाए ।
लक्ष्मण प्राण विधाता हो तुम, राम के अतिशय पासा हो तुम ।
जिस पर होते तुम अनुकूला, वह रहता पतझड़ में फूला ।
राम भक्त तुम मेरी आशा, तुम्हें ध्याऊँ मैं दिन राता ।
आकर मेरे काज संवारो, शत्रु हमारे तत्क्षण मारो ।
तुम्हरी दया से हम चलते हैं, लोग न जाने क्यों जलते हैं ।
भक्त जनों के संकट टारे, राम द्वार के हो रखवारे ।
मेरे संकट दूर हटा दो, द्विविधा मेरी तुरन्त मिटा दो ।
रुद्रावतार हो मेरे स्वामी, तुम्हरे जैसा कोई नाहीं ।
ऊँ हनु हनु हनुमन्त का बीसा, बैरिहु मारु जगत के ईशा ।
तुम्हरो नाम जहाँ पढ़ जावे, बैरि व्याधि न नेरे आवे ।
तुम्हरा नाम जगत सुखदाता, खुल जाता है राम दरवाजा ।
संकट मोचन प्रभु हमारो, भूत प्रेत पिशाच को मारो ।

अंजनी पुत्र नाम हनुमन्ता, सर्व जगत बजता है डंका ।
सर्व व्याधि नष्ट हो जावे, हनुमद् बीसा जो कह पावे ।
संकट एक न रहता उसकी, हं हं हनुमंत कहता नर जो ।
ह्रीं हनुमंते नमः जो कहता, उससे तो दुख दूर ही रहता ।

॥ दोहा ॥

मेरे राम भक्त हनुमन्ता, कर दो बेड़ा पार ।
हूँ दीन मलीन कुलीन बड़ा, कर लो मुझे स्वीकार ॥
राम लषन सीता सहित, करो मेरा कल्याण ।
संताप हरो तुम मेरे स्वामी, बना रहे सम्मान ॥
प्रभु राम जी माता जानकी जी, सदा हों सहाई ।
संकट पड़ा यशपाल पे, तभी आवाज लगाई ॥

(इति श्री मद् हनुमन्त बीसा श्री यशपाल जी कृत समाप्तम् ॥)



◆ द्वादश पाठ ◆

श्री हनुमत्स्तोत्रम्

अथ हनुमान स्तोत्रम ॥

अब हनुमान स्तोत्र कहता हूँ ।

उक्तं च सुदर्शन संहितायां ॥

यह स्तोत्र सुदर्शन संहिता में व्यक्त हुआ है ।

नमो हनुमते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे ।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥ १ ॥

श्री हनुमान जी को नमस्कार है । मारुति के पुत्र को नमस्कार है । श्री रामचन्द्र जी के भक्त को नमस्कार है । श्याम मुख वाले को नमस्कार है ।

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे ।
लंकाविदाहनार्थाय हेलासागरतारिणे ॥ २ ॥

सुग्रीव से मित्रता करवाने वाले वानरों के वीर को नमस्कार है । लंका को जलाने वाले व महासागर को लांघ जाने वाले ।

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च ।
रावणान्तकुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः ॥ ३ ॥

सीता जी का शोक नष्ट करने वाले, श्री रामचन्द्र जी की अंगूठी ले जाने वाले, रावण व उसके कुल का संहार करने वाले को बारम्बार नमस्कार है ।

मेघनादमखध्वंसकारिणे ते नमो नमः ।
अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे ॥ ४ ॥

मेघनाथ का यज्ञ नष्ट करने वाले को पुनः पुनः नमस्कार है । अशोक

वन को तहस-नहस करने वाले और भय का हरण करने वाले ।

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने ।
वनपालशिरच्छेदलङ्काप्रासादभञ्जिने ॥ ५ ॥

वायु के पुत्र जो परम वीर हैं । जो आकाश पर उड़ लेते हैं । जंगल के प्रहरियों का सिर काट कर लंका के भवन तोड़ देने वाले ।

ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलांगलधारिणे ।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥ ६ ॥

अग्नि पर जल रहे स्वर्ण की कान्ति जैसा जिनका शरीर आभायुक्त । जिनकी लम्बी पूंछ है । सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण को विजय दिलाने वाले रामचन्द्र जी के दूत को नमस्कार है ।

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मपाशनिवारिणे ।
लक्ष्मणांगमहाशक्तिघातक्षतविनाशिने ॥ ७ ॥

अक्ष्य का वध करने वाले, ब्रह्म पाश को हटाने वाले, लक्ष्मण के शरीर पर लगे महाशक्ति के घावों को नष्ट करने वाले ।

रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः ।
ऋक्षवानरवीरौघप्राणदाय नमो नमः ॥ ८ ॥

राक्षसों का वध करने वाले । शत्रुओं का संहार करने वाले । भूतों का विनाश करने वाले को नमस्कार है । रीछ तथा वानरों को प्राण प्रदान करने वाले को बारम्बार नमस्कार है ।

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः ।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः ॥ ९ ॥

शत्रु सेना का बल नष्ट करने वाले । अस्त्र-शस्त्रों को व्यर्थ करने

वाले। विषों का नाश करने वाले। द्वेष का नाश करने वाले तथा ज्वरों को नष्ट करने वाले को नमस्कार है।

महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे।
परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥ १० ॥

महा भय प्रदाता शत्रु को नष्ट करने वाले। भक्तों की सहायता करने वाले। दूसरों के द्वारा किये जाने वाले मन्त्र, यन्त्र व तन्त्र का स्तम्भन करने वाले।

पयः पाषाणतरणकारणाय नमो नमः।
बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे ॥ ११

जल पर पत्थर तैराने वाले को पुनः पुनः नमस्कार है। उदय होते सूर्य को ग्रस लेने वाले और भव सागर से पार लगाने वाले।

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च।
रिपुमाया विनाशाय रामाज्ञालोकरक्षिणे ॥ १२ ॥

नाखूनों से युद्ध करने वाले विशाल देही। दाँतों से युद्ध में शस्त्रों का कार्य लेने वाले। शत्रु की माया को समाप्त करने वाले। श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा से सृष्टि की रक्षा करने वाले।

प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने।
करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ॥ १३ ॥

प्रत्येक गाँव में प्रतिमा स्वरूप से स्थित। राक्षसों और भूतों का वध करने वाले। विशाल पर्वत को शस्त्र समान प्रयोग करने वाले तथा वृक्षों को भी ऐसे ही प्रयोग करने वाले को नमस्कार है।

बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च।

विहंगमाय सर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥ १४ ॥

बचपन से ही ब्रह्मचारी। रुद्र के अवतार। आकाश में गमन करने वाले। कठोर देह वाले को नमस्कार है।

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च।
दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने ॥ १५ ॥

केवल कौपीन धारण करने वाले। श्री राम की भक्ति में ही रते हुए। दक्षिण दिशा में भास्कर समान। सौ चन्द्रमाओं जैसी कान्ति वाले।

कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च।
स्वाम्याज्ञापार्थसंग्रामसंख्ये संजयधारिणे ॥ १६ ॥

तान्त्रिक प्रहार से होने वाली क्षत व व्यथा को नष्ट करने वाले। समस्त कलेशों को हरने वाले। स्वामी की आज्ञा से अर्जुन को मैत्री देने वाले।

भक्तान्तदिव्यवादेषु संग्रामे जयदायिने।
किलकिलाबुबुकोच्चार घोरशब्दकराय च ॥ १७ ॥

भक्तों को दिव्य वाद-विवाद में जिताने वाले व युद्ध में विजयी बनाने वाले। किलकिला कर बुबुक सा घोर शब्द उच्चारित करने वाले।

सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे।
सदा वनफलाहारसंतृप्ताय विशेषतः ॥ १८ ॥

सर्प, अग्नि तथा व्याधि का स्तम्भन करने वाले। वन में विचरने वाले। विशेष सर्वदा वन के फलों का आहार करके तप्त होने वाले।

महार्णवशिला बद्धसेतुबन्धाय ते नमः ॥ १८.५ ॥

समुद्र के ऊपर पत्थरों का पुल बनाने वाले को नमस्कार है।

अथ फलश्रुति ॥

अब स्तोत्र पाठ के लाभ कहता हूँ ।

वादे विवादे संग्रामे भये घोरे महावने ।
सिंहव्याघ्रादिचौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद्भयं न हि ॥ १९ ॥

यदि इसका पाठ किया जाये तो वाद-विवाद में, युद्ध में, घोर व प्रान्त में, सिंह व्याघ्रादि हिंसक पशुओं व चौरों से भय नहीं रहता है ।

दिव्ये भूतभये व्याधौ विषे स्थावरजंगमे ॥ २०

दिव्य व भूतों के भय, व्याधियों, विषों, स्थावर जंगमों ।

राजशस्त्रभये चोग्रे तथा ग्रहभयेषु च ।
जले सर्पे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्प्लवे ॥ २१ ॥

राजा के उग्र शस्त्रों का भय व ग्रहों का भय हो, जल में, सर्पों से, महावृष्टि से, दुर्भिक्ष से, प्राण संकट में आ जायें ।

पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्येत भयेभ्यः सर्वतो नरः ।
तस्य क्वापि भयं नास्ति हनुमत्स्तवपाठतः ॥ २२ ॥

इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । इससे प्राणी भय से मुक्त हो जाता है । उसे किसी प्रकार का भय नहीं रहता है ।

सर्वदा वै त्रिकालं च पठनीयमिदं स्तवम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ २३ ॥

सदैव या तीनों संध्यायों में इस स्तव को पढ़ना चाहिये । इससे

समस्त अभीष्ट सिद्ध होते हैं। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये।

विभीषणकृतं स्तोत्रं तार्क्ष्येण समुदीरितम्।
ये पठिष्यन्ति भक्त्या वै सिद्धयस्तत्करे स्थिताः ॥ २४ ॥

यह स्तोत्र विभीषण जी के द्वारा कहा गया व गरुड़ ने इसे प्रयोग किया था। जो भी इसको श्रद्धा, भक्ति से पढ़े, सुनेगा उसे समस्त सिद्धियाँ प्राप्त हो जायेंगी।

(इति आद्यानन्द यशपाल 'भारती' विरचिते हनुमद पाचांग श्री सुदर्शन संहितायां विभीषण गरुड़ सम्वादे आयभा हिन्दी भाषा टीका सहिते सम्पूर्णम् ॥)





◆ त्रयोदश पाठ ◆

श्री हनुमानजी की आरती

कार्पासवर्त्तिकायुक्तं दिव्यं घृतेन पूरितम् ।
आर्तिक्यं संगृहाणेदं कृपया करुणानिधे ॥
ॐ श्री हनुमतेनमः नीराजनं समर्पयामि ।

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥ टेक ॥
जाके बल से गिरिबर काँपै, रोग दोष जाके निकट न झाँपै ॥ १ ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ २ ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सीय सुधि लाये ॥ ३ ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पबनसुत बार न लाई ॥ ४ ॥
लंका जारि असुर संहारे, सिया राम जी के काज सँवारे ॥ ५ ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि सजीवन प्राण उबारे ॥ ६ ॥
पैठि पताल तोरि जम कारे, अहिरावन की भुजा उखारे ॥ ७ ॥
बाँये भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संतजन तारे ॥ ८ ॥
सुर नर मुनि आरती उतारे, जै-जै-जै हनुमान जी उचारे ॥ ९ ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरति करत अंजना माई ॥ १० ॥
जो हनुमान (जी) की आरति गावै, बसि बैकुंठ परम पद पावै ॥ ११ ॥
लंक विध्वंस कियौ कपिराई, तुलसिदास स्वामी आरति गाई ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥



◆ चतुर्थदश पाठ ◆

संक्षिप्त हनुमद पूजन

॥ ध्यान समर्पण मन्त्र ॥

कर्णिकार सुवर्णाभं वर्णनीयं गुणोत्तमम् ।
अर्णवोल्लङ्घनोद्सुक्तं तूर्ण ध्यायामि मारुतिम् ॥
ॐ श्रीहनुमते नमः ध्यानं समर्पयामि १ ॥

॥ गन्ध समर्पण मन्त्र ॥

दिव्यकर्पूरसंयुक्त मृगनाभिसन्वितम् ।
सकुंकुमं पीतगन्धं ललाटे धारय प्रभो ॥
ॐ श्रीहनुमते नमः गन्धं समर्पयामि ॥ २ ॥

॥ पुष्प समर्पण मन्त्र ॥

ऋतु कालोद्भवं पुष्पं पुष्पमालां तथैव च ।
संगृहाण महावीर रामभक्त महाकपे ॥
ॐ श्रीहनुमते नमः पुष्पं समर्पयामि ॥ ३ ॥

॥ धूप समर्पण मन्त्र ॥

वनस्पति रसोपेतं सुगन्धाढयं मनोहरम् ।
धूपं च संगृहाणेदं महाबल यशोधन ॥
ॐ श्रीहनुमते नमः धूपमाघ्रापयामि ॥ ४ ॥

॥ दीप समर्पण मन्त्र ॥

घृतपूरितमुज्जवालं सितसूर्य-समप्रभम् ।
अतुलं तव दास्यामि व्रतपूर्त्यै सुदीपकम् ॥

ॐ श्रीहनुमते नमः दीपं दर्शयामि ॥ ५ ॥

॥ नैवेद्य समर्पण मन्त्र ॥

नैवेद्यं मधुरं देव शुभसंस्कार संस्कृतम् ।
मया समर्पितं नाथ संगृहाण सुरर्षभ ॥
ॐ श्रीहनुमते नमः नैवेद्यं निवेदयामि ॥ ६ ॥

॥ नमस्कार मन्त्र ॥

नमस्तेस्तु महावीर नमस्ते वायु-नन्दन ।
विलोक्य कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल ॥
ॐ श्रीहनुमते नमः नमस्कारं समर्पयामि ॥ ७ ॥

